मई २०१२

दादावाणी

मूल्य: ₹१०

बिजली की चमकार में सुई पिरोने जैसा मानव भव,
भारत भूमि, ज्ञानी पुरुष सोने में सौरभ आश्रव,
यहाँ से समकित बीज पचाकर महाविदेह में जन्म होगा,
निकाल लेना काम, अंदर दादा हैं समझ में आ जाएगा।

तंत्री तथा संपादक :
डिम्पल महेता
वर्ष : ७, अंक : ७
अखंड क्रमांक : ७९
मई २०१२

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सीटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: अडालज,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : (079) 39830100
e-mail :
dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Owned by
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Editor : Dimple Mehta

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
१५ साल
भारत : ८०० रुपये
यु.एस.ए. : १५० डॉलर
यु.के. : १०० पाउन्ड
वार्षिक
भारत : १०० रुपये
यु.एस.ए. : १५ डॉलर
यु.के. : १० पाउन्ड
भारत में D.D. / M.O. 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

काम निकाल लो

संपादकीय

परम पूज्य दादा भगवान उद्‌बोधित सत्संग में कई बार 'काम निकाल लो' शब्द प्रयोग हुआ है। ये 'काम निकाल लो' शब्द किसी शब्दकोश में नहीं मिलेगा, क्योंकि ये तो ज्ञानी के हृदय में से निकले हुए शब्द हैं। ये शब्द तो ज्ञानी का हृदय ही है, यदि ऐसा कहें, ये कुछ ज़्यादा कह दिया ऐसा तो नहीं कहा जाएगा न!

इस 'काम निकाल लो' शब्द के पीछे जो गूढ़ रहस्य हैं, वे तो ज्ञानी के अलावा और कौन समझा सकता है? इन शब्दों के पीछे ज्ञानी की भरपूर करुणा छलकती हुई नज़र आती है कि, 'हे जीव, ऐसा अनोखा विज्ञान मिला, अब तो बूझो (समझो)!' अनंत जन्म, देह और देह के रिश्तेदारों के पीछे बिगाड़े, अब ये एक जन्म ज्ञानी के कहे अनुसार चलो, तो कोई भी आपका मोक्ष रोक नहीं सकेगा।

'काम निकाल लो' शब्द का गूढ़ार्थ समझाते हुए दादाश्री यहाँ एक वस्तु पर अंगुली-निर्देष करते हैं, कि परीक्षा ऐसी दो कि पास (उतीर्ण) होने के लिए किसीके पास गिड़गिड़ाना नहीं पड़े। ज्ञान मिलने की खुमारी तो होती ही है किन्तु साथ ही जागृतिपूर्वक पाँच आज्ञा पालन के लिए भी ऐसी ही खुमारी आनी चाहिए। पाँच आज्ञा, वह तमाम शास्त्रों का अर्क है, अब बाकी क्या रहा? 'आज्ञा वही धर्म और आज्ञा वही तप।'

जो करोड़ों जन्मों में भी प्राप्त नहीं हो सकता वो आत्मा का लक्ष्य सहज ही मिल गया। अब तो ज्ञानी का ज्ञान और सत्संग का परिचय किस तरह बढ़े, उसीकी पैरवी (कोशिश) में लीन रहना है। उसके लिए क्या करना चाहिए? संसार की चीज़ों पर जो भाव है उसका डीवैल्युएशन करते जाना है, तो सब ठीक हो जाएगा। इसके लिए दादाश्री अच्छी कुंजी बताते हैं कि 'व्यवस्थित के ज्ञान के आधार पर, जागते हुए भी सोना और जीवित रहते हुए भी मर जाना।' ये एक ही कुंजी, हमें सभी संयोगों में असरमुक्त रखकर ज्ञान जागृति बढ़ाने के लिए अत्यंत उपयोगी बन सकें ऐसी है।

अनंत जन्मों के पुण्य के परिपाक (फल) के रूप में ऐसा अपूर्व अवसर मिला है, तो फिर 'काम निकाल लेने के' पुरुषार्थ में विलंब किस लिए? अब तो सर्वस्व त्यागकर इसीके पीछे लग जाना है, कि बस 'सिर्फ यही' और कुछ भी नहीं। बस, मोक्ष का *नियाणां* ही कर लेना है जिससे ज़्यादा जन्म नहीं हों। अनंत जन्मों का घाटा एक जन्म में पूरा करना है, तो क्या करना पड़ेगा? दादाजी के पीछे पड़ जाना चाहिए, उनके कहे हुए शब्दों के पीछे पड़ जाना चाहिए। ज्ञानी द्वारा बताए गए मार्ग पर, एक जन्म सिन्सियरली, बिना पोलवाला पुरुषार्थ अब आरंभ कर दीजिए।

तो चलिए, हम सभी दृढ़ निश्चयपूर्वक ज्ञानी द्वारा बताए गए मार्ग पर 'काम निकाल लेने का' पुरुषार्थ आरंभ कर दें। और इसकी सच्ची समझ का प्रस्तुत संकलन में आलेख किया गया है, जिसका जागृतिपूर्वक उपयोग करने से अवश्य ही काम निकल जाएगा, ये नि:संदेह है।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ है अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। पाठक जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर कोई बात आप समझ न पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। भाषांतर में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

काम निकाल लो

काम निकाल लो यानी क्या?

प्रश्नकर्ता : दादाजी, आप हमेशा कहते हो न कि, 'आपका काम निकाल लो, आपका काम निकाल लो।' तो हम हमारा काम किस तरह निकाल लें?

दादाश्री : काम निकाल लो यानी, हमारे कहे अनुसार चलो।

प्रश्नकर्ता : आज्ञा में रहो!

दादाश्री : हाँ। अनंत जन्म लापरवाही की है, अब ऐसा मत करना। वैसे भी व्यवस्थित बदलनेवाला नहीं है, आप इधर से उधर शोर मचाओगे तो भी। इसलिए सिर्फ इतना कर लो।

'काम निकाल लो' यानी हम क्या कहना चाहते हैं? हम ऐसा नहीं कहते कि आप पूरी तरह से आज्ञा का पालन करो। ये राग मैं रोज़ नहीं अलापता। किन्तु काम निकाल लो यानी ऐसा समझ जाना चाहिए कि आज्ञा का पालन ज़्यादा करने के लिए कह रहे हैं, आज्ञा में जागृत रहने के लिए कह रहे हैं। आज्ञा पालन में जागृत रहो, ऐसा मैं कहना चाहता हूँ। अर्थात् अपना काम निकल गया। परीक्षा में प्रोफेसर क्या कहते हैं, कि 'ऐसी परीक्षा दो कि मार्क बढ़ाने नहीं पड़ें, किसीके पास गिड़गिड़ाना नहीं पड़े, इस प्रकार परीक्षा दो।' मतलब, सामनेवाले को समझ जाना चाहिए कि पढ़ाई ज़्यादा करनी पड़ेगी। सबकुछ पद्धित के अनुसार होना चाहिए। 'काम निकाल लो' अर्थात् मैं ऐसा कहना चाहता हूँ!

ज्ञानी की आज्ञा, वो तो सचोट वस्तु कहलाती है। बिना मिलावटवाली, खालिस वस्तु कहलाती है। यदि इस आज्ञा का पालन करे न, तो काम निकल जाए ऐसा है। जब तीर्थंकर हाज़िर होते हैं, तब तक शास्त्र-धर्म-तप के लिए मना करते हैं। वे जो आज्ञा दें, उसी आज्ञा में रहना है। आज्ञा मोक्ष प्राप्त करवाएगी। उसी प्रकार, हम भी अभी शास्त्रों को पढ़ने के लिए मना करते हैं। आज्ञा का पालन करना! काम हो जाएगा!

देखो, काम निकाल लेने में देर लगे ऐसा नहीं है। और पुस्तक पढ़ने के लिए भी कहा नहीं है, कोई भी मेहनत करने के लिए नहीं कहा है। पुस्तक (शास्त्र) पढ़ने की भी ज़रूरत नहीं है। सारा ही ज्ञान हाथ पर लिखकर दे दिया है न! जैसे कि एक पत्ते पर! एक वटपत्र पर लिखकर दें, उतना ही लिखकर दिया है और, कुछ और करना नहीं है।

प्रश्नकर्ता : जितना पालन हो सके उतना दादाजी की आज्ञा का निष्ठापूर्वक पालन करते हैं। फिर भी दादाजी कहते हैं काम निकाल लेना। तो अब काम निकाल लेने के लिए कितनी जल्दबाज़ी करें और क्या करें? दूसरा कोई रास्ता है? दादाजी को देखते रहते हैं, दादाजी के पास बैठते हैं, दादाजी निरंतर हाज़िर हैं ऐसा लगता है!

दादाश्री : ये पाँच आज्ञा का पालन करे न तो उसमें सबकुछ आ जाता है और फिर आसान भी है। फिर भी दूसरी वस्तु उसे परेशान करती है, वो भी

हम समझते हैं। पहले का भरा हुआ माल उसे तंग तो करेगा न? धक्के मारेगा न? उसके लिए भी हम मना नहीं करते, वो तो मारेगा, फिर भी तुम सयाने होकर काम निकाल लो।

प्रश्नकर्ता : यानी काम निकाल लेना मतलब आज्ञा का पालन करना है न, दादाजी?

दादाश्री : सबकुछ आ गया। सिर्फ आज्ञा का पालन ही नहीं, काम निकाल लेना मतलब आप कहो, 'दादाजी अब मैं अपना काम निकाल लूँ, तो आपको कोई हर्ज है?' तब मैं कहूँ कि 'नहीं, बस। अब मैं नहीं कहूँगा।' 'मैं अपना काम निकाल लूँ' ऐसा तुम कहो तो फिर मैं वही बात फिर से तुम्हें नहीं कहूँगा।

अब बाकी का काम आप निकाल लो

प्रश्नकर्ता : किन्तु काम तो दादाजी ने ही निकाल दिया है।

दादाश्री : हाँ, निकाल तो दिया है किन्तु, 'निकाल लो' मतलब आपको निकाल लेना है। निकाल दिया वो अलग वस्तु है और निकाल लो वो अलग वस्तु है। मैंने तो देहाध्यास निकाल दिया है। क्या निकाल दिया है?

प्रश्नकर्ता : देहाध्यास निकाल दिया है।

दादाश्री : ये जो मशीन (स्वरूप जागृति रूपी) दिया है, उस मशीन को आप चालू रखो तो फर्स्टक्लास चलेगा। देहाध्यास छूटे तो बंधन जाए।

'छूटे देहाध्यास तो नहीं कर्त्ता कर्म नो...'

अब देहाध्यास छूट गया। हंड्रेड परसेन्ट (सौ प्रतिशत) छूट गया। इसलिए हम बार-बार बोलते रहते हैं कि इस जन्म में निश्चय पक्का हो जाए। निश्चय अनिश्चित रहेगा न तो भीतर अनिश्चित इकट्ठा होगा। जैसी समझ भीतर वैसा बाहर हो जाता है। इसलिए हम आपसे कहते हैं कि बिल्कुल प्योर (शुद्ध) है। जो हमारे कहे अनुसार प्योर रहेगा, तो चाहे कुछ भी हो जाए, तो भी उसे छूएगा नहीं, उसे छूनेवाला भी नहीं है। छूएगा भी नहीं और बाधक भी नहीं होगा। ये तो विज्ञान है।

आत्मा से नि:शंक होने के बाद...

ज्ञान लेते समय आपको एक ही घंटा लगा था या ज़्यादा समय लगा था? किन्तु कैसा उग आया है! वर्ना तो कितने ही जन्मों के बाद ज्ञान प्रकट होता है! ये तो अपना अक्रम विज्ञान है। ये विज्ञान बहुत फर्स्ट क्लास है।

ये तो सबसे बड़ा आश्चर्य है। वर्ल्ड में कहीं नहीं मिले ऐसा आश्चर्य, और दो ही घंटों में आत्मा प्राप्त होता है। वर्ना, नौकरी करते हुए मनुष्यों को आत्मा प्राप्त होता होगा?

तीर्थंकरों के अलावा और कोई भी आत्मा से नि:शंक हुआ नहीं है। सिर्फ क्षायक समकिती थे, कृष्ण भगवान जैसे, वो आत्मा से नि:शंक हो गए थे और आप भी आत्मा से नि:शंक हो गए हो। आपको अब शंका नहीं है न कि आत्मा ऐसा होगा या वैसा होगा? या कोई शंका है?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : मतलब आत्मा से नि:शंक हो गए। अबज़ों रुपये दें तो भी ये पद मिले ऐसा नहीं है, किन्तु आजकल के लोगों को ये समझ में नहीं आता। इतना ऊँचा ये पद है।

उस पद का रक्षण करना

ऐसे पद का शास्त्र में भी उल्लेख नहीं हुआ है, ऐसा पद किस तरह प्राप्त हो सकता है? ये जो पद आपको मिला है, वो आश्चर्यजनक पद मिला है। इसलिए, इसकी बहुत हिफाज़त करना, इसे बहुत सँभालना। क्योंकि, ऐसा पद दुनिया में कहीं भी उत्पन्न हुआ ही नहीं है!

अरे, आपको ये जो पद मिला है न, वो, सभी साधुओं को, जैनों को, वैष्णवों को, सभी को इकट्ठा करें और आपके पद के बारे में कहें तो वे कहेंगे, ऐसा पद हो ही नहीं सकता। ऐसा तो सत्युग में भी नहीं था। आपका ये पद किसीकी धारणा में नहीं आए ऐसा ग़ज़ब का पद है, ऊँचा पद है।

करोड़ों जन्मों के बाद भी जो वस्तु प्राप्त नहीं हो सकती वह आपको सजह ही प्राप्त हो गई है। इसलिए अब उसका रक्षण करना।

ज्ञान की क़ीमत तो समझो

यह जो ज्ञान प्राप्त हुआ है न, पाँच अबज रुपये दें तो भी ये ज्ञान प्राप्त हो सके ऐसा नहीं है। पाँच लाख जन्मों में भी नहीं हो सकता, ऐसा एक घंटे में हो जाता है। तब फिर इस पर (व्यर्थ दलीलें करके) टाइम (समय) बिगाड़ने जैसा नहीं है, ये विवरण करने जैसी चीज़ नहीं है। 'दिस इज़ द केश बेंक ऑफ डिवाइन सोल्युशन।' केश बैंक में ऐसा नहीं कह सकते कि आपका चेक कितने बजे आएगा और कितने बजे मुझे पेमेन्ट मिलेगा। ऐसा-वैसा कुछ भी नहीं कह सकते। आपकी समझ में आता है न? केश बैंक कहा, तो आप समझ जाते हैं या नहीं समझ जाते? आपको क्या लगता है?

यानी ये तो आश्चर्यजनक वस्तु हुई है। काम ही निकाल लेने जैसा है। भले ही अबजों रुपये जाएँ। लेकिन व्यापार में उथल-पुथल भी नहीं करनी है।

पराया भाग वह नहीं 'मेरा'

उलझन का 'एन्ड' (अंत) कब आता है? रिलेटिव और रियल, ये दो ही वस्तुएँ जगत् में हैं। ऑल दिस रिलेटिव आर टेम्परेरी एडजस्टमेन्ट और रियल इज़ दी परमानेन्ट। अब परमानेन्ट (स्थायी) भाग कितना और टेम्परेरी (अस्थायी) भाग कितना, इनके बीच लाइन ऑफ डीमार्केशन (सीमांकन रेखा) डाल दें तो उलझन बंद होगी, वर्ना उलझन का अंत नहीं आता। चौबीसों तीर्थंकरों ने ये डीमार्केशन लाइन डाली थी। ये रियल और रिलेटिव को अलग करना, वो ज्ञानीपुरुष के अलावा अन्य किसीका काम ही नहीं है न! कुंदकुंदाचार्य ने ये लाइन डाली थी। और अब हम ये डीमार्केशन लाइन डाल देते हैं कि तुरन्त उसका राह पर आ जाता है। रिलेटिव और रियल, इन दोनों की उलझन के बीच लाइन ऑफ डीमार्केशन डाल देते हैं कि ये भाग तुम्हारा और ये पराया भाग है। अब पराए भाग को 'मेरा' मत मानना, ऐसा उसे समझा देते हैं तो उसका हल निकल आता है।

शुद्धात्मा के लक्ष्य से काम निकाल लो

इस जगत् का लक्ष्य बैठता है किन्तु अपने स्वरूप का लक्ष्य कभी नहीं बैठता, ऐसे ये अलख निरंजन हैं। ज्ञानीपुरुष वो लक्ष्य बिठा देते हैं, उसके बाद छुटकारा मिलता है। वर्ना छुटकारा नहीं मिलता। और संसार का लक्ष्य तो बातों-बातों में ही बैठ जाता है। यदि हम कहें कि 'ये आपके भागीदार', तो तुरन्त दूसरे दिन लक्ष्य बैठ जाता है कि ये मेरे भागीदार आए। कोई गलती नहीं होती। दिन में यदि पैर टूट गया हो तो रात को उठते वक्त तुरन्त लकड़ी याद आती है। अरे मुआ, एक दिन में ही तुम्हें कैसे याद आ गया कि पैर टूट गया है? तब कहे, 'नहीं, वो लक्ष्य बैठ गया है।' रात को कहेगा, 'मेरी लकड़ी दो।' अरे, किसलिए लकड़ी माँग रहे हो? तब कहेगा, 'मेरा पैर टूटा हुआ है न!' तो मुआ, एक दिन में भूल नहीं जाता? नहीं भूलता, इसे लक्ष्य बैठना कहते हैं।

'मैं शुद्धात्मा हूँ' लक्ष्य बैठे, उसे भगवान ने सबसे बड़ी वस्तु कही है। वहाँ क्रमिक मार्ग में तो शब्द की प्रतीति हो, उसकी बहुत क़ीमत है। शुद्धात्मा के जो गुण हैं, उन गुणों पर प्रतीति बैठती है कि, 'मैं ये हूँ।' उसकी बहुत बड़ी क़ीमत मानी गई है। उसे समकित कहा है, वो भी फिर शब्द की प्रतीति।

और आपको तो 'वस्तु' (आत्मा) की प्रतीति हो गई, स्वाभाविक प्रतीति है इसलिए क्षायक प्रतीति कहलाती है! ये ज्ञान बहुत काम करनेवाला (क्रियाकारी) है।

अब इसके बाद हमारी आज्ञा का पालन करते रहना। आज्ञा आसान और अच्छी है, रिलेटिव और रियल पूरे दिन में एक घंटे तो देखना ही पड़ेगा न!

हम पाँच आज्ञा देते हैं न, उस आज्ञा का जितना पालन करो उतना लाभ होगा। कम पालन करो तो थोड़ा कम लाभ मिलता है। किन्तु क्रोध-मान-माया-लोभ तो चले ही जाते हैं। ये कमज़ोरियाँ चली जाती हैं।

ये ज्ञान देने के बाद मैंने आपमें हिंसकभाव को उत्पन्न होते हुए देखा ही नहीं है। ये विज्ञान ही इतना सुंदर है कि ठेठ तक का काम निकाल देगा।

विज्ञान का लाभ उठा लो

अब, 'मैं चंदूभाई* (*चंदूभाई की जगह वाचक को खुद का नाम समझना है।) हूँ' इस ज्ञान पर तो आपको शंका पड़ गई है न? या शंका नहीं पड़ी?

बाहर की दुनिया में, खुद अपनेआप पर शंका पड़े ऐसा है ही नहीं न? दस्तावेज में भी लिखते हैं कि वकीलसाहब ने हस्ताक्षर किए, तो तुरन्त 'एक्सेप्ट' (स्वीकार)! इतने सारे लोग क़बूल करते हैं, फिर उसे शंका पड़ेगी ही कैसे?

प्रश्नकर्ता : (यहाँ) शंका पड़ी है। मतलब, मैं आत्मारूप हूँ और चंदूभाई वह परसत्ता है, पड़ोसी हैं।

दादाश्री : हाँ, चंदूभाई वह पड़ोसी हैं। उदाहरण के तौर पर एक 'प्लोट' हो, तो वो जब तक दोनों भाइयों की इकट्ठी साझेदारी में हो तब तक पूरे 'प्लोट' में कुछ भी हुआ तो वो दोनों का नुकसान कहलाता है। किन्तु फिर दोनों के बीच बँटवारा कर दिया हो कि इस तरफ़ चंदूभाई का और उस तरफ़ दूसरे भाई का, तो बँटवारा होने के बाद उस तरफ़वाले भाग के ज़िम्मेदार आप नहीं हो। अर्थात् उसी तरह आत्मा और अनात्मा का बँटवारा हुआ है। उसके बीच में 'लाइन ऑफ डीमार्केशन' मैंने डाली है। 'एक्ज़ेक्ट' डाली हुई है। ऐसा इस काल में विज्ञान उत्पन्न हुआ है, उसका लाभ हमें उठा लेना है।

कभी भी इस अहंकार पर वहम नहीं पड़ा है। सभी चीज़ों पर वहम पड़ा है किन्तु अहंकार पर वहम नहीं पड़ा है। 'यह चंदूभाई, वो मैं हूँ' उस पर वहम पड़ा तो अहंकार पर वहम पड़ा कहलाता है।

अदा करीए रोल नाटक का, 'ड्रामेटिक'

'चंदूभाई' पर वहम पड़ा, उसे हमें निकाल नहीं देना है। उसे 'ड्रामेटिक' (नाटकीय) रखना है। यदि कोई भर्तृहरि का किरदार अदा कर रहा हो, तो वैसे तो पूरा किरदार निभाता है। शोर मचाता है, वैराग्य लाता है, आँखों में पानी लाता है, रोता है, सारा अभिनय करता है। लोगों को लगता है कि उसे बहुत दुःख है और यदि हम उससे पूछें कि, 'क्या आपको बहुत दुःख था?' तब वो कहता है, 'नहीं, मैं तो लक्ष्मीचंद हूँ, ये तो मुझे भर्तृहरि का किरदार अदा करने को मिला है।' इसी तरह आपको 'चंदूभाई' का किरदार अदा करना पड़ेगा। और 'खुद कौन है' ये समझ में आ गया, तो काम बन गया!

संकल्प-विकल्प से रहना दूर

हमारे शब्द जो हमने दिए होते हैं, उन्हें अगर पकड़कर रखें न तो ठेठ (मोक्ष) तक पहुँचा देते हैं। मैंने टिकट दिया हो कि यहाँ से अहमदाबाद जाओ, फिर अगर टिकट घर पर रखकर जाए, ऐसी बेदरकारी करे तो क्या होगा? और मैंने जो दिया है, उसमें अगर संकल्प-विकल्प करें तो वो काम बिगाड़ देते हैं। मैंने दूध में दही डालकर, हिलाकर आपको दिया हो,

किन्तु रात को आपके मन में ऐसा हुआ कि दही बन गया होगा या नहीं बना होगा? और रात को दो बजे उठकर रसोईघर में जाकर दही को हिलाएँ तो फिर दख़ल होगी! रोकड़े में पूछना क्या है? जहाँ उधार हो वहाँ पूछना पड़ता है। हमें, अपना (काम) कैसे बने वही देखना है न? 'महावीर भगवान क्या करते थे? ब्याह क्यों किया था? तीस वर्ष की उम्र में उन्हें बेटी क्यों थी?' ये सब पूछने से क्या फ़ायदा? हमें तो अपना काम निकाल लेना है! हमें भूख लगी हो तो खाना खा लें। इससे भूख मिट जाएगी या नहीं? फिर शाम तक के लिए दु:ख मिट गया न? ऐसा ये तो रोकड़ा है। इसमें संकल्प-विकल्प नहीं करने चाहिए।

व्यापार रोकड़े का, उधार नहीं

अभी आप मेरे पास बैठे हो, उसका भी रोकड़ा फल मिलता है। यहाँ पर जो भी करो, सबका रोकड़ा फल मिलता है, उधार नाम मात्र को भी नहीं, उसे विज्ञान कहा जाता है। यहाँ के लिए आप एक चक्कर लगाओ तो आपको उसका रोकड़ा फल मिले बगैर नहीं रहेगा। ये तो विज्ञान है, जहाँ से आप पकड़ो वहाँ से गणना मिलती है।

ये तो एक आश्चर्य है। ग्यारहवाँ आश्चर्य उत्पन्न हुआ है। दादाजी के पास अनंत प्रकार की सिद्धियाँ हैं, वर्ना, धर्म में केश (रोकड़ा) बोला जाता होगा?

मेल बिठालो अब

हम 'स्वरूप ज्ञान' देते हैं तब प्रज्ञा को बिठा देते हैं, फिर वो प्रज्ञा आपको हर क्षण सावधान करती है। भरत राजा को तो, सावधान करने के लिए चौबीसों घंटे नौकर रखने पड़ते थे! चाहे कैसे भी विकट संयोग आएँ तब हमारा ज्ञान हाज़िर हो जाता है, हमारी वाणी हाज़िर हो जाती है, हम हाज़िर हो जाते हैं और आप जागृति में आ जाते हो! हर क्षण जागृत रखे ऐसा हमारा ये 'अक्रम विज्ञान' है। काम निकाल लेना है। एक बार मेल बिठा लिया हो तो हमेशा के लिए हल निकल आता है!

'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा लक्ष्य रहता है निरंतर?

प्रश्नकर्ता : निरंतर रहता है, दादाजी।

दादाश्री : इसे आत्मध्यान कहते हैं, शुक्लध्यान कहते हैं। शुक्लध्यान प्रत्यक्ष मोक्ष का कारण है, इसलिए अब काम निकल गया। 'दादा, दादा' करते रहो। 'शुद्धात्मा, शुद्धात्मा' करते रहो। दादा, वही शुद्धात्मा है। हम भी दादा भगवान को नमस्कार करते रहते हैं। वह दादा भगवान चौदह लोक के नाथ हैं, प्रकट हुए हैं!

रोज़ रात को 'मैं शुद्धात्मा हूँ' बोलते-बोलते सो जाना है। और इन पाँच आज्ञा का पालन करना है, बहुत हो गया। यहीं से ही मुक्ति हो गई। सर्व दु:खों का अभाव हो गया, अब संसारी दु:ख नहीं छूते।

इसे भूलेंगे नहीं न?

सांसारिक मुसीबतें आएँ, हाथ की, पैर की बहुत तकलीफ़ होती हो उस समय 'भले ही हो, मैं हूँ न, घबराना मत' यों कहना। या फिर शरीर में ज़्यादा तकलीफ़ होती हो तो, 'मेरा नहीं है' ऐसा कहो, कि अलग रहता है। क्योंकि लाइन ऑफ डीमार्केशन डाल दी है। ये आपका और ये आपका नहीं, ऐसे। अर्थात् इसे ज़रा रेग्युलर कॉर्स में (नियमित तौर पर) समझ लेने की ज़रूरत है। मैंने जो कहा, उसे भूलेंगे नहीं न?

उस परमात्मा योग में ही रहीए अब

परमात्मयोग आपको दिया है। अब फिर से चूक मत जाना। ऐसा किसी भी जन्म में नहीं मिलता। इसी जन्म में ऐसा हुआ है ये! ये इस काल का ग्यारहवाँ आश्चर्य है! इसलिए योग मिल गया है। ये तो आपको पुण्य के कारण योग मिल गया है, इसलिए ऊपर तक सब देख आए हो। अमुक हद

तक तो सब देख लिया है आपने, और आपके लक्ष्य में तो है न कि क्या-क्या देखा है?

ये परमात्मयोग जो मैंने आपको दिया है, जितना हो सके उतना उसी योग में ही रहो। आप खुद परमात्मा बनो ऐसा योग दिया है! बीच में कोई अटका नहीं पाए और संसार की सारी रामायण पूरी हो, अठारह कोश (खंड) युद्ध जीत सकते हो, ऐसा योग है। क्योंकि शुद्धात्मा, वही कृष्ण है और वही जीतानेवाला है।

आज्ञा आराधन से मुक्ति सरल

हमारी पाँच आज्ञा वह 'हम' ही हैं, 'खुद' ही हैं। हमारी पाँच आज्ञा में रहने का प्रयत्न करीए।

हमारी आज्ञा में रहें तो काम निकाल दे ऐसा है, और आज्ञा आसान है, कठिन नहीं है। खाने-पीने की छूट, मुंबई शहर में, मोहमयी नगरी में मोह छूता नहीं है, अब यदि फोर्ट एरिया में जाएँ तो कोई भी चीज़ खरीदने की इच्छा ही नहीं होती, आकर्षण ही नहीं होता। ज्ञान लेने से पहले तो इधर-उधर नज़रें घुमाते थे। अब वो आकर्षण उड़ जाता है!

संसार चलता है किन्तु छूता नहीं, बाधक नहीं होता और काम बन जाए ऐसा है।

पाँच आज्ञा का पालन करे उसे संसारी दु:ख नहीं छूता। ये विज्ञान ऐसा है कि संसारी दु:ख छूता ही नहीं है। ये पहली मुक्ति और फिर निर्वाण हो वो दूसरी मुक्ति। मुक्ति के दो भेद हैं। पहली मुक्ति हो गई, सर्व दु:खों से मुक्त हो गए। यदि हमारी आज्ञा का पालन करें तो दु:ख छूता नहीं है। दु:ख होने के बावजूद भी दु:ख छूता नहीं है। हाँ, *उपाधि* (बाहर से आनेवाले दु:ख) में भी समाधि रहती है। आधि-व्याधि-*उपाधि* में, ज़्यादा *उपाधि* हो तो भी समाधि रहती है। ऐसा ये चौबिस तीर्थंकरों का विज्ञान है, अत्यंत कल्याणकारी! सिर्फ हमारी आज्ञा का आराधन करना है।

भूल मिटाए, उसका काम बन जाए

हमने तो कितने ही लोगों को ज्ञान दिया है, वे निरंतर समाधि में ही रहते हैं। क्योंकि, दख़ल नहीं है न! उन्होंने तय किया है कि जिस बात को हम सही मानते थे, वो बात दादाजी के कहे अनुसार गलत निकली। इसलिए उस बात को एक तरफ़ रख दो।

जो हमें दु:खदायी लगता था, वो सुखदायी बन गया। ओहोहो, ऐसा! इस सुखदायी को हम दु:खदायी मानते थे, वो भूल थी। ये भूल मिट जाए, उसका काम बन जाए!

अब हल ला दो

जो व्यक्ति कुछ भी नहीं समझता हो उसका यहाँ पर जल्दी हल निकल जाता है।

हमें तो अब हल ला देना है! अब इस संसार का हमेशा के लिए हल ला देना है, ये संसार तो कभी भी सुखिया होने ही नहीं देगा!

दादा कितनी बार याद आते हैं?

प्रश्नकर्ता : रोज़।

दादाश्री : (दूसरे व्यक्ति से) तुम्हें दादा याद रहते हैं या नहीं?

प्रश्नकर्ता : दस प्रतिशत व्यवहार-व्यापार करता हूँ, बाकी के नब्बे प्रतिशत दादाजी का निदिध्यासन रहता है।

दादाश्री : ठीक है। यानी नब्बे प्रतिशत यहाँ रहता है और दस प्रतिशत जितना ही सर्विस में रहता है न! फिर तो अच्छा है! काम निकाल लिया है न!

प्रश्नकर्ता : दादाजी, आपका स्मरण और निदिध्यासन में क्या कोई फ़र्क़ है?

दादाश्री : निदिध्यासन तो मुखारविंद के साथ रहता है और स्मरण मुखारविंद के बिना भी रह सकता है। निदिध्यासन, मुखारविंद के साथ का बहुत काम निकाल देता है। 'दादा' 'एक्ज़ेक्ट' नहीं दिखें, उसमें हर्ज नहीं है। आँखें नहीं दिखें तो भी हर्ज नहीं है, किन्तु मूर्ति दिखनी चाहिए। जिसका निदिध्यासन करें उस रूप हो जाते हैं।

ज्ञानीपुरुष के कहे अनुसार चलो

भगवान ने कहा है कि ज्ञानीपुरुष वही खुद का आत्मा है। और दादाजी याद रहें न, वही आत्मा। वर्ना कैसे याद रहते? ज्ञानीपुरुष वही आपका आत्मा है। इसलिए जब तक आपको अपने आत्मा का प्रत्यक्ष अनुभव नहीं होता, तब तक ज्ञानीपुरुष के कहे अनुसार चलो। आत्मा का प्रत्यक्ष अनुभव, जो रात-दिन आपको सावधान करता है। सावधान नहीं करता? अब चाहे 'चंदूभाई' गुस्सा होते रहें, किन्तु, अकुला गए हों तो भीतर 'आप' मना करते हो कि, 'नहीं, ऐसा नहीं होना चाहिए।' तो ये क्या है? ये दो कौन हैं? पहले तो दो नहीं थे। मतलब, आत्मा निरंतर हाज़िर है। ये अक्रम विज्ञान का आत्मा, ऐसा आत्मा लाखों जन्म लेने पर भी प्रकट नहीं होता, और प्रकट हो जाए फिर चिंता नहीं होती।

इस वर्ल्ड (दुनिया) में कोई भी व्यक्ति चिंता रहित नहीं हुआ है, लेकिन मैं आपको चिंता रहित कर देता हूँ! किन्तु मैं उसे मेरी स्थिति में बिठाऊँ तभी चिंता रहित होगा न! यों ही नहीं होगा न!

अब प्रैक्टिस करने लगो

चिंता बंद हो जाए तो समझ जाना कि अब (एक) जन्म में मोक्ष में जानेवाले हैं। हमें चिंता ही नहीं हो, संसार में रहने के बावजूद, बीवी-बच्चों के साथ रहने के बावजूद, ये सारा व्यवहार करने के बावजूद भी चिंता नहीं हो तो समझ लेना कि एक जन्म में मोक्ष में जानेवाले हैं, ये पक्का हो गया।

प्रश्नकर्ता : ऐसी स्थिति प्राप्त करना मुश्किल है।

दादाश्री : मुश्किल तो है। किन्तु ये अक्रम विज्ञान निकला है न, इसलिए मोक्ष तो खिचड़ी बनाने से भी ज़्यादा आसान हो गया है! यानी, ये अक्रम विज्ञान प्राप्त करना मुश्किल है, ऐसे पुण्य का जागना मुश्किल है। और प्राप्त हो जाए तो अपना कल्याण हो जाए। क्योंकि, पुण्य जागने के बाद आपको कुछ करना नहीं है। आपको लिफ्ट में बैठना है, सिर्फ हाथ-पैर बाहर मत निकालना, इसलिए आज्ञा दी है! उसका पालन करना है!

हमने तो ऐसा कहा है कि ये ज्ञान लेने के बाद चिंता हो तो जोखिमदारी हमारी। किन्तु आज्ञा का पालन करना चाहिए। आज्ञा कठिन भी नहीं है। आप प्रैक्टिस करने लगो।

ये पाँच आज्ञा आसान और सरल है। घर छोड़ना नहीं है, बाहर कुछ छोड़ना नहीं है, बेटे-बेटियों की शादी करने की भी छूट देते हैं।

जीते जी मर जाओ और जागते हुए सो जाओ

जगत्-व्यवहार चलाने के लिए हमें कुछ करना होता ही नहीं। व्यवहार व्यवस्थित चला ही लेता है, 'एक्ज़ेक्ट' चला ही लेता है। हम सो जाएँ तो भी भीतर खाना हज़म हो जाता है, तो फिर जगत् में नहीं चलेगा? इसलिए हमने ऐसा कहा कि जागते हुए भी थोड़ा बहुत सोना पड़ेगा। जागते हुए सोना यानी क्या? कि जागते हों और गिलास टूटे तब, हम सो रहे हों और गिलास टूटे तो कैसा असर होगा? वैसा असर जागते हुए होना चाहिए। असर में फ़र्क़ नहीं पड़ना चाहिए। हम सो रहे हों और गिलास टूटे तब कैसे सयाने होकर रहते हैं? और जागते हुए टूटे तब बीच में कौन-सा भूत घुस जाता है? अहंकार और ममता का भूत घुस जाता है। उस भूत को हम पहचान लें तो जागते हुए भी

सो सकते हैं। यानी खुली आँखों से सोएँ तो कोई झंझट ही नहीं होगी न! और उसमें गलत भी क्या है?

ऐसा है, अब चंदूभाई को अपना काम नहीं निकाल लेना है, किन्तु अब तो 'हमें' अपना काम निकाल लेना है।

आपके स्वरूप में रहो निरंतर

व्यवस्थित ही आपका सबकुछ चलाता है। आपको जो कुछ चाहिए वो आपके पास आ जाएगा। आपको जिस चीज़ की इच्छा हो वो चीज़ आपके पास आ जाती है, आपको मेहनत भी नहीं करनी पड़ती, ऐसा ये 'ज्ञान' है। यह तो अलौकिक विज्ञान है, इसलिए हमें तो यहाँ काम निकाल लेना है।

प्रश्नकर्ता : ये व्यवस्थित समझने के बाद किसी भी बात का तंत नहीं रहता।

दादाश्री : फिर तो दख़ल ही नहीं रहती न! ये व्यवस्थित हम देखकर बोले हैं।

इसलिए बाहर की बातों में आपको चिंता ही नहीं करनी है। आप अपने स्वरूप में रहो, निरंतर! आपके हिसाब के अनुसार सबकुछ आपके पास आएगा। मेरे पास भी हिसाब के अनुसार ही सबकुछ आता है। ऐसा कलियुग है, दुषमकाल है, मुंबई जैसी मोह नगरी है, फिर भी मुझे कुछ भी छूता नहीं है। और बीस साल से निरंतर समाधि रहती है। बोलो अब, ऐसी मोहमयी नगरी में ऐसा कहीं होता होगा? किन्तु ये विज्ञान ही अलग है, अक्रम विज्ञान है, तुरन्त ही मोक्षफल देनेवाला है।

ज्ञान को समझे तो काम बन जाए

ये तो विज्ञान है। अपूर्व विज्ञान जो कभी भी प्रकट नहीं होता, ऐसा दस लाख वर्षों के बाद प्रकट होता है। वर्ना बीवी-बच्चे होते हुए भी क्या मोक्ष में जाना संभव है? चिंता बंद होती है? किसी ज्ञानी को भी चिंता बंद नहीं हुई थी। ये तो अक्रम विज्ञान का प्रताप है!

इकलौता बेटा मर जाए तो भी संतोष रहता है। व्यवस्थित को समझ लिया हो, ज्ञान को समझ ले तो काम बन जाता है, नहीं समझे तो फिर कुछ नहीं कर सकते। यदि व्यवस्थित समझे तो बेटा मर जाने पर भी संतोष रहता है। ये पाँच अबज का हीरा है, ऐसा हमारी समझ में आए, भान में आए, ज्ञान में आए, तब काम होता है।

अब वर्तमान में रहो

प्रश्नकर्ता : दादाजी के पास आने के बाद यक़ीन हो गया कि ये देहधारी परमात्मा हैं, इसलिए फिर यदि उसका तीव्र पुरुषार्थ हो तो.....

दादाश्री : बस, तो फिर बहुत हो गया। वो छूट गया, और कोई हर्ज नहीं है। नुकसानकारक नहीं है और संसार चले उसके लिए एक सहावल (आधार) दे दिया। क्योंकि, पहले तो संसार चलाने की चिंता रहती थी। किन्तु आधार दे दिया, कि संसार भी व्यवस्थित चला लेगा। सारे सहावल के साथ ज्ञान दिया है। यानी किसी भी तरह की वरीझ (चिंता) रखे बिना सब कुछ दे दिया है और क्रमिक मार्ग में तो घर चलाने की *उपाधि* (परेशानी), व्यवसाय चलाने की *उपाधि,* और फिर भविष्य की चिंता। यहाँ तो भविष्य की चिंता-विंता कुछ भी नहीं। भूतकाल गोन (गया), भविष्यकाल व्यवस्थित के ताबे में है, इसलिए हमें निरंतर वर्तमान में रहना है।

जिस प्रकार दादा वर्तमान में रहते हैं न, वैसे ही। इसलिए फिर दादा फ्रेश लगते हैं। थके हुए दादा भी फ्रेश लगते हैं। उसका कारण क्या है? तब कहे, वर्तमान में ही रहते हैं। यानी ये व्यवस्थित तो बहुत हेल्पींग (मददकर्त्ता) है, इसलिए काम निकाल लो। अभी आपको कोई परीक्षा नहीं देनी है, टेस्ट एक्झामिनेशन नहीं है। भान के तौर पर आपको

आत्मा प्राप्त हुआ है। उसमें आपको कोई टेस्ट एक्झामिनेशन नहीं देना पड़ता।

ऐसा ताल कभी बैठता नहीं है। मुफ्त में, बिना मेहनत किए मोक्ष!

निश्चित होकर काम किए जाओ

'व्यवस्थित' का अर्थ समझे तब तो काम निकाल ले। और जो भ्रांतिवाला है वो कब इसका अर्थ बिगाड़ दे ये कह नहीं सकते। इसका अगर स्पष्टिकरण समझ ले तो काम बन जाए ऐसा है और समझना हो तो यहाँ पर समझ सकते हैं।

'व्यवस्थित' तो बहुत ऊँची वस्तु है। यदि 'व्यवस्थित' को समझ ले न, तो सारा दिन उसे समाधि रहे। 'व्यवस्थित' तो ऐसा कहता है कि काम किए जाओ। फिर प्याले टूट जाएँ तो व्यवस्थित, ऐसा समझकर आगे बढ़ो। अपनेआप काम किए जाओ और फिर जो परिणाम आया वो 'व्यवस्थित'।

काम निकाल लेने जैसा 'ये' एक मात्र स्टेशन आया है। इसलिए खाओ, पीओ और प्राप्त संयोगों को सुख से भोगो और अप्राप्त संयोगों की झंझट मत करो।

समताभाव से *निकाल* करो

प्राप्त संयोगों के अलावा जगत् में और कुछ नहीं है। 'प्राप्त संयोगों का सुमेल रखकर समताभाव से *निकाल* (निपटारा) करो।' ये अद्‌भूत वाक्य निकला है। इस एक ही वाक्य में जगत् के तमाम शास्त्रों का ज्ञान, सार के तौर पर आ गया। प्राप्त संयोगों के हम ज्ञाता-दृष्टा, अप्राप्त के नहीं।

ग्यारह बजे कोर्ट में जाना हो और ग्यारह बजे ही भोजन की थाली आए, तो उस समय वो संयोग प्राप्त हुआ कहलाता है। सुमेल रखकर पहले भोजन का समभाव से *निकाल* करना पड़ता है। इसलिए शांति से खा लेना है। दोनों हाथों से (जल्दबाज़ी करके) थोड़े ही खा सकते हैं? शांति से खाना चाहिए, मतलब उस वक्त चित्त कोर्ट में नहीं जाना चाहिए, वर्ना शरीर यहाँ खाए और आप कोर्ट में होते हो। पहले शांति से खाना खाओ और फिर आराम से कोर्ट में जाओ। लोग क्या करते हैं कि प्राप्त संयोगों को भोग ही नहीं सकते और अप्राप्त के पीछे अधीर होकर घूमते हैं। इस प्रकार दोनों संयोगों को खो देते हैं। मुआ, भोजन प्राप्त हुआ है उसका सुमेल कर, उसे भोग, तो ही उसका *निकाल* होगा। कोर्ट तो अभी दूर है, अप्राप्त है, उसके पीछे क्यों पड़ा है? संयोग के अनुसार काम निकाल लेना है। ज्ञानीपुरुष का संयोग मिले और तब काम नहीं कर लें, तो फिर तो हो ही गया न! ऐसी सच्ची और सरल समझ कौन देगा? ये तो आत्मअनुभवी का ही काम है।

तो हल निकल आता है

आप 'समभाव से *निकाल* करने का' तय करोगे तो आपका सब राह पर आ जाएगा। उस शब्द में जादू है, वो अपनेआप ही सारा निबेड़ा ला देगा।

पूरे जगत् के साथ तो हमें समभाव है ही। सिर्फ हमारे साथ जो दो सौ-पाँच सौ लोग हैं, जो अपने ऋणानुबंधवाले हैं न, उनके साथ ही झंझट है। उनके साथ ही समभाव से *निकाल* करने का है। सिर्फ उतने लोगों की वजह से अनंत जन्मों तक भटकते हैं, और पूरी दुनिया की जोखिमदारी लेते हैं।

प्रश्नकर्ता : दादाजी ने सबसे बड़ी शोध (खोज) दी है कि पूरे जगत् के साथ आप वीतराग हो और आपकी दो सौ-पाँच सौ फाइलों के साथ ही आपको राग-द्वेष हैं।

दादाश्री : बस, और कोई झंझट है ही नहीं। बस, इतना ही है। इतने के लिए बैठे रहे हो! यदि सभी के साथ होती न तो समझते कि 'चलने दो न! जो होगा वो सही', किन्तु इतने दो सौ-पाँच सौ के

लिए (मोक्ष) अटका है। पाँच अबज की आबादी है, उनमें से सभी के साथ हमें कोई झंझट नहीं है। दो सौ-पाँच सौ के साथ ही है न? इसलिए समभाव से *निकाल* करो न! मेरा अक्षर (मेरी बात) मानो न! तो हल आ जाएगा न!

दादाई बैंक से चुकाओ केश पेमेन्ट

प्रश्नकर्ता : जो भी फाइलें हैं, उनका जल्द से जल्द *निकाल* हो जाए तो अच्छा, ऐसा भाव रहता है।

दादाश्री : ऐसा तो रहेगा ही न! जल्दी *निकाल* हो जाए ऐसी हमारी भावना है न, इसलिए जल्दी हल निकल आएगा। और कई लोग तो ऐसा कहते हैं कि, 'अरे, अभी अड़चन (तकलीफ़) नहीं आए तो अच्छा है।' तो उसे देर से आएगी, मरते समय आएगी। मरते समय, जब शरीर मज़बूत नहीं होगा, तब तकलीफ़ें आएगी। इसलिए, देर से मत बुलाना। सब से कहो कि, 'आज अभी मुझमें शक्ति है, शरीर मज़बूत है। सब आ जाएँ तो मैं पेमेन्ट कर दूँगा। दादाई बैंक खुली है। सब ले जाओ, अब मुझमें शक्ति है। अब मैं आपको चक्कर नहीं लगवाऊँगा।' ये तो दादाई बैंक है, ऐसी-वैसी बैंक नहीं है। यहाँ तो केश पेमेन्ट। दिस इज़ द केश बैंक इन द वर्ल्ड। इसलिए हमें अब हल निकाल लेना है।

समझा-बुझाकर हल निकाल लो

दुकान बेच देनी है ऐसा तय करें तब से अब किस चीज़ की खरीदारी करनी है वो सबकुछ खुद जानते हैं। अब क्या करना है, वो भी जानते हैं। क्या ऐसा नहीं जानते कि अब वसूली निपटा लो? जितनी वसूली निपट सके उतनी निपटा लो, नहीं निपटनेवाली हो तो उसके लिए हमें झगड़े नहीं करने हैं। यहाँ अपने पास लोगों की पूँजी हो तो दे दो। पूँजी यानी, लोगों की जो रक़म हमारे बहीखाते में जमा हो वो सभी को दे देनी है और नहीं देंगे तो रात के दो बजे वो लोग शोर मचाएँगे। जब कि वसूली करने जाएँ तो लोग शायद वसूली नहीं भी दें, वो तो उनकी मर्ज़ी की बात है। कोई वसूली नहीं दें तो कोर्ट में दौड़ना, वकीलों को रखना, ऐसी सब झंझट में कहाँ पड़ें?

हमें दुकान बेच देनी है, तो फिर अब सारी खरीदारी बंद कर देनी पड़ेगी न? और फिर माल को बेचते रहना है, और अगर माल नहीं बिके तो पता लगाना चाहिए कि आज-कल ग्राहक क्यों नहीं आते? फिर पता चलता है कि शक्कर नहीं है, गुड़ नहीं है, इसलिए लोग नहीं आते। शक्कर और गुड़ भी रखने पड़ेंगे न? नहीं हों तो हमें मँगवाने पड़ेंगे। क्योंकि, शक्कर नहीं हो, गुड़ नहीं हो, तो फिर लोग कहेंगे कि वहाँ तो शक्कर-गुड़ कुछ भी नहीं मिलता, इसलिए दूसरी दुकान में चलते हैं। जिस दुकान में शक्कर मिलती हो, लोग दूसरा सारा सामान वहीं से लेते हैं। इसलिए हमें शक्कर के बोरे मँगवाने पड़ते हैं। किन्तु, दुकान बेच देनी है ये उनके लक्ष्य में होता ही है या रात को भूल जाते हैं? जब से तय किया, तब से दुकान की सारी चीज़ें बेचने ही लगता है। रास्ते में कोई माल बेचनेवाला मिल जाए कि 'अरे! आपको पंद्रह प्रतिशत कमीशन दूँगा, ये माल खरीद लो।' तब कहेंगे कि, 'नहीं भाई, मुझे माल नहीं चाहिए, अब दुकान बेच देने का तय किया है।' ऐसा तय करने के बाद वो वापस दुकान नहीं जमाता न? इसी तरह हमें अपनी ये दुकान बेच देनी है। अब सारे (ऋणानुबंध के) हिसाबों का हल निकाल लेना है। समझा-बुझाकर भी हल निकाल लेना है।

शुद्धात्मा के बल पर करो हिसाब चोखे

फिर वसूलीवाले आएँ, पूँजीवाले आएँ, तो हम कहें कि, 'दूसरे भी जो हैं, जिनकी पूँजी बाकी हो वो सभी जल्दी ले जाओ। हमें अब दे देना है।' ऐसा करने से हमारे यहाँ भीड़ तो होगी (हमें तकलीफ़ तो होगी)। भीड़ होगी, दम भी घुटेगा, किन्तु हमने

दे दिया इसलिए फिर छूट गए। दम तो घुटेगा, भले ही घुटे, किन्तु एक बार दे देने से हल तो आ गया न! यों हल्की-हल्की चपत लगाकर सिर खपाना, उससे अच्छा तो मारो एक हथौड़ा, तो हल निकल आए। एक ही हथौड़े से हल निकल आता है न? और हल्की-हल्की चपत लगाते रहें तो घाव भरेंगे ही नहीं और जलन होती रहेगी, इससे अच्छा एक हथौड़ा मारे तो हल आ जाए। और सोना तो उतने का उतना ही रहता है न? या कम हो जाता है? सिर्फ आकार और गढ़ाई का नुकसान होता है। इसलिए अब दम घुटे तो आपत्ति मत रखना। सब आ जाएँ तो अच्छा है, हल आ जाएगा। दो-पाँच आएँ तो कहना कि अभी दूसरे बाकी हों तो आ जाओ, अब सभी का पेमेन्ट कर देंगे। क्योंकि अब शुद्धात्मा प्राप्त हो गया है इसलिए सारा पेमेन्ट हो सकता है।

कर्ज़ तो होता है। किसीको लाख का होता है और किसीको पाँच लाख का होता है। किन्तु जिसने चुकाना शुरू कर दिया है, जिसे चुकाना ही है, उसे देर नहीं लगेगी। यानी अब इस जन्म में काम निकाल लेना है।

सुलटा होता है अपनेआप, करने से होता है उल्टा

प्रश्नकर्ता : किन्तु दादाजी, अमुक हमारी कुटुंब की फाइलें हैं, उनका *निकाल* नहीं हो रहा, किनारे तक आकर रुक गया है। तो हमें क्या करना चाहिए?

दादाश्री : स्टेशन पर राह देखते रहें किन्तु गाड़ी तो अपने समय पर ही जाएगी। बाहर देखते रहेंगे तो मूर्ख कहलाएँगे। ये वीतरागों का विज्ञान है, मोक्ष में रहकर काम करो। सारा काम हो जाएगा! जहाँ वीतराग विज्ञान हो वहाँ कुछ भी प्रिय नहीं होता, त्रास नहीं होता, दुःख नहीं होता, कुछ भी नहीं होता। कैसा विज्ञान! चौबीस तीर्थंकर कैसे थे! लोग यदि समझे होते तो कल्याण हो जाता। एक शब्द जितना भी अगर महावीर को पहचाना होता तो काम बन जाता।

सुलटा कैसे हो इसके विचार नहीं करने हैं, सुलटा अपनेआप होता ही रहता हैं। और अगर बहुत तकलीफ़ होती हो तो यहाँ आकर आशीर्वाद ले जाना, तो हो जाएगा। सुलटा करना नहीं होता, करने से उल्टा ही होता है। हमेशा कुछ भी 'करना' वो उल्टा ही होता है और सुलटा अपनेआप होता है, ऐसा नियम है।

प्रश्नकर्ता : 'ब्यूटीफुल!' कितनी सुंदर बात बताई। ये तो एकदम आसान कर दिया, दादाजी।

दादाश्री : और नहीं तो क्या! सुलटा अपनेआप होता है, करने से उल्टा होता है।

प्रश्नकर्ता : ये तो बड़ा रहस्य खुला किया दादाजी ने। लोग तो सुलटा करने जाते हैं।

दादाश्री : करने से ही तो सभी उल्टा कर रहे हैं न! उल्टा करना हो तो 'करो'। सुलटा करना हो तो ज्ञाता-दृष्टा रहो, आज्ञा में रहो।

काम निकाल लो इसी जन्म में ही

प्रश्नकर्ता : दादाजी, आपकी कृपा के बिना हम उन ग्रंथियों को नहीं छेद सकते।

दादाश्री : उन सभी का छेदन हो जाता है, कृपा हो न, तो सारा छेदन हो जाता है। कृपा से क्या नहीं हो सकता? भयंकर कर्मों को भस्मीभूत करते हैं, ऐसे ज्ञानीपुरुष क्या नहीं करते?

प्रश्नकर्ता : आपकी हाज़िरी में ये सब चोखा हो जाए, ऐसे सभी को आशीर्वाद दीजिएगा।

दादाश्री : ऐसे आशीर्वाद तो हम देते हैं, किन्तु ये लोग चोखा करें तब न!

प्रश्नकर्ता : चोखा कर डालेंगे।

अब सावधान रहना

दादाश्री : हमें तो अपना काम निकाल लेना है। इसकी पूर्णाहुति के लिए ही शरीर घिस डालना है! यदि इन कर्मों को खत्म कर दिया होता और ये ज्ञान मिलता, तो एक ही घंटे में उसका काम पूर्ण हो जाता। किन्तु कर्म पूरे नहीं किए हैं, राह पर चलते हुए को ज्ञान दे दिया है! इसलिए, भीतर कर्म के उदय बदलते हैं तब बुद्धि का प्रकाश आ जाता है, उस घड़ी उलझन होती है। जब उलझन हो तब 'दादा, दादा' करते रहना और कहना, 'ये लश्कर उलझाने आया है।' क्योंकि ऐसे उलझानेवाले अभी भीतर बैठे हैं, इसलिए सावधान रहना। और उस समय 'ज्ञानीपुरुष' का जबरदस्त आसरा रखना। मुश्किल तो किस घड़ी आए, ये कह नहीं सकते। किन्तु उस घड़ी 'दादा' की सहायता माँगना, ज़ंज़ीर खींचना तो 'दादा' हाज़िर हो जाएँगे।

अब तो एक पल भी गँवाने जैसा नहीं है। ऐसा मौका बार-बार नहीं आएगा, इसलिए काम निकाल लेना चाहिए। यदि यहाँ जागृति रखी तो सारे कर्म भस्मीभूत हो जाएँगे और एक जन्म लेकर मोक्ष में चले जाओगे।

मोक्षमार्ग आसान है, सरल है और सुगम है। समभावी मार्ग है। बिना किसी मेहनत के चले, ऐसा है। इसलिए काम निकाल लो। अनंत जन्मों में भी फिर से ये योग मिले ऐसा नहीं है।

पीछे पड़कर निकाल लाओ चट-पट

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा होने के बाद उस पर दबाव क्यों आते हैं?

दादाश्री : ये जो शुद्धात्मा प्राप्त हुआ है, वो आपके सारे कर्मों का *निकाल* करने के बाद प्राप्त हुआ हो, तो भीतर कुछ भी घुसता नहीं है। अभी तो आपके कर्म खत्म होना बाकी है और शुद्धात्मा प्राप्त हो गया है। मैं ये कहना चाहता हूँ कि, ऐसा प्राप्त होने के बाद चट-पट कर्मों का *निकाल* कर दो। सारा कर्ज़ चुका दो। वर्ना (आत्मा) शुद्धात्मा प्राप्त हुए बिना, कर्ज़ किसी भी तरह चुकता नहीं हो पाता! मतलब, ये तो नादारी में से बिना नादारीवाले होने जैसी बात है। कर्ज़ इतना है कि कोई सीमा नहीं है। और अब जो भटक गए न, वे ८१,००० (इक्यासी हज़ार) वर्षों तक भटकनेवाले हैं। इसलिए यह ज्ञान देते हैं, जिसे ये योग प्राप्त हो जाए, वो अपना काम निकाल लो, वर्ना फिसलनेवाला काल है। आपके कर्ज़ों की कोई सीमा नहीं थी, ऐसे में आपको अंदर जागृत कर दिया है।

डख़ोडख़ल मत करना

ये आश्चर्यजनक मार्ग है। इसलिए इसके पीछे चट-पट पड़कर हमें काम निकाल लेना है! दूसरी इच्छाएँ उत्पन्न हो, तो उन्हें जैसे-तैसे करके शिथिल कर देना है, ये सारा चारित्रमोह है। इच्छा वो कोई वास्तविक मोह नहीं है, चारित्रमोह है। चारित्रमोह तो भगवान को भी था। घर से बाहर निकले न, तब से केवळज्ञान होने तक जो मोह बचा वो सारा चारित्रमोह! यदि आप पूरणपोली-जलेबी खाते हों, तो मैं आपको डाटूँगा नहीं। मुझे पता है कि ये आपका चारित्रमोह है और आप उसका *निकाल* कर रहे हो। ऐसा मोह फिर से नहीं हो इस प्रकार उसका समभाव से *निकाल* कर देना है। अभी जो मिला वो व्यवस्थित, नहीं मिला वो भी व्यवस्थित। पूरनपोली कच्ची मिली वो भी व्यवस्थित, अच्छी मिली वो भी व्यवस्थित। सब व्यवस्थित है न?

व्यवस्थित अर्थात् क्या कहना चाहते हैं कि दख़ल मत करना। व्यवस्थित ही है, ऐसा ही है। वही सही है। आप जो मानते हो वो गलत है, ऐसा कहना चाहते हैं।

प्रश्नकर्ता : सही बात है।

दादाश्री : और फिर लिखा भी है न कि, यह एक व्यवस्थित (संपूर्ण) समझ में आया होता न तो हम तैर कर पार उतर जाते। दादाजी का व्यवस्थित यदि समझपूर्वक समझ में आया होता तो, दृष्टिपूर्वक। किन्तु ऐसी दृष्टि कैसे संभव है! बिना तप किए दृष्टि उत्पन्न नहीं होती और दृष्टि हमेशा के लिए नहीं रहती।

छूट जाओ आज्ञा के बल पर

प्रश्नकर्ता : दादाजी, छूटना है, छूट नहीं सकते।

दादाश्री : अरे! छूटना है, छूट नहीं सकते, उसे तो आप जानते हो न! तो उसके पीछे लगोगे तो अपनेआप धीरे-धीरे छूट जाएगा। हमें जानना है कि यहाँ पर ये पट्टी चिपक गई है वो उखड़ नहीं रही। पानी लगाएँ, दूसरा कुछ लगाएँ, ऐसे करते करते उखड़ जाएगी। बिना उखड़े चारा ही नहीं है न!

प्रश्नकर्ता : तो क्या आशा लगाए बैठे रहना है?

दादाश्री : आशा रखनी ही नहीं है। बैठे भी नहीं रहना है। हमें तो 'देखते' रहना है, जो छूट नहीं रहा उसे। आशा किसे रखनी है? आत्मा को आशा नहीं होती।

एक ही घंटे में सारा नुकसान थोड़े ही पूरा होगा? अनंत जन्मों का नुकसान है, दो-तीन जन्म तो लगेंगे। ज्ञान लेने से पहले तो ये लाख जन्मों तक भी पूरा नहीं होता, वो, दादाजी के ज्ञान से इतना आसान हो गया। इसलिए इस ज्ञान के बारे में तो ऐसा बोलना चाहिए कि, 'धन्यभाग! मुझे ये ज्ञान प्राप्त हुआ और दादाजी मिले।'

प्रश्नकर्ता : ऐसा नहीं रहता। अब ऐसा लगता है, अब ऐसा रहता है कि हम कितने हत्भागी हैं कि दादाजी मिले फिर भी काम निकाल लेना नहीं आता।

दादाश्री : हाँ। दादाजी मिले, इसलिए काम निकाल लेना है। फिर से ऐसे दादाजी देखने भी नहीं मिलेंगे।

और वैसी भी वो नुकसान तो पूरा हो जाएगा। अपनेआप ही पूरा हो जाएगा। किन्तु दादाजी के बाद हमने उनकी आज्ञा का पालन किया तो तुरन्त ही हमारा काम हो जाएगा। इसके बारे में सोचना भी मत। नुकसान कितना है उसे देखना नहीं है, हमें तो आज्ञा का पालन किस तरह से हो और आज्ञा भूल नहीं जाएँ, उतना ही देखना है। इसमें फिर क्या नुकसान है?

अहंकार भग्न हो जाए तो क्या करना चाहिए? अहंकार को जबरदस्त तोड़ दें तो? शस्त्रों से आसपास गहरे घाव करें, किन्तु आत्मा के पास अनंत शक्ति है। इसलिए, 'अनंत शक्तिवाला हूँ, तुम्हें जो करना है करते रहो न!' हमें ऐसी ज़िद पकड़कर बैठ जाना है। तप करना है। इसलिए फिर धीरे-धीरे अपनेआप ही कम हो जाते हैं। और आसपास झूँड कम हो गया तो फिर उसका बल टूट गया। बहुत जबरदस्त शक्ति है न! हमारी हाज़िरी से सब टूट जाता है।

यानी हल आ गया

प्रश्नकर्ता : आपकी हाज़िरी में ये जो निश्चय किया है, उसे आपकी हाज़िरी में ही पूरा करना है।

दादाश्री : बस, बस। पूरा हो जाएगा। आपको ऐसा लगेगा कि बहुत ज़्यादा शक्ति बढ़ गई।

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादाजी। पहले के मुकाबले विचारों की इन्टेन्सिटी (तीव्रता) कम हो गई है। पहले जितनी तीव्रता से विचार आते थे वैसी तीव्रता अब नहीं रहती।

दादाश्री : हाँ, बस। वो तो अपनेआप उड़ जाएँगे। हम स्ट्रोंग (द्रढ़) रहें न, तो और कुछ बाधक नहीं होता, और आत्मा की अनंत शक्ति है,

उससे विशेष शक्तिवाला दूसरा कोई है ही नहीं। तो फिर दूसरे क्या कर लेंगे? और फिर (विचार) न्यूट्रल हैं। स्त्री जाति भी नहीं है और पुरुष जाति भी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : सही है। पहले की तरह भीतर से अब इच्छापूर्वक हस्ताक्षर नहीं होते।

दादाश्री : नहीं होते, वही सबसे बड़ा आश्चर्य है न! इसीके कारण ये शक्ति है न, जबरदस्त शक्ति उसीकी है। वर्ना ऐसी शक्ति रहती होगी? एक दिन उड़ गया तो खत्म।

प्रश्नकर्ता : अक्रम विज्ञान के अलावा ऐसा संभव नहीं है।

दादाश्री : विचार आए, तो कोई भी विचार महत्व का नहीं होता। जब तक वो विचार अपनेआप चलता रहे, तब तक चलने देना। नहीं चले और चला जाए, तो भेज देना। (तब) व्यवस्थित वैसा ही होता है। जो हो रहा है वही करेक्ट। यानी दूसरी कोई झंझट में नहीं पड़ना है। 'मैं अनंत शक्तिवाला हूँ' कहा, कि सबकुछ बंद हो गया। चाहे कुछ भी हो, लेकिन 'अनंत शक्तिवाला हूँ' कहा कि हल आ गया।

प्राप्त तप को भुगतना

ज्ञानीपुरुष स्पष्टीकरण कर देते हैं। कलियुग में प्राप्त तप को भुगतना। जो तप आ पड़े, उतने भुगतो तो बहुत हो गया।

ये बाहर के तप तो लोगों को दिखते हैं और अंतर तप तो सिर्फ हम ही जानते हैं। रास नहीं आए ऐसा हो, वहाँ स्थिर होना है। अच्छा नहीं लगता हो फिर भी किसीको परेशानी न हो उस तरह शांति से रहना है। और लोग तो, तप आ जाए तो सामना करते हैं, खुद का बचाव करते हैं। हमें बचाव नहीं करना है। बचाने का भाव हुआ यानी उस तप का पूरा लाभ नहीं लिया। ये हमने रिश्वत ले ली।

चाहे कैसी भी स्थिति हो, उसमें समता रहे तो वही अदीठ तप! और क्या? सबकुछ अपना है, दूसरों का नहीं है। दूसरों का हो और आपको भुगतना पड़े, ऐसा नहीं होता। इसलिए इसमें प्योर (शुद्ध) रहना है। प्योर बनना है। इमप्योरिटी (अशुद्धता) नहीं रहनी चाहिए। सारा कचरा निकल जाता है न, दादाजी के पास तो सबकुछ निकल जाता है। दादाजी सभी को भगवान बनाते हैं। आपने ऐसा बदलाव नहीं देखा!

निबेड़ा लाओ सम्यक् तप से

प्रश्नकर्ता : दादाजी, देह से और वाणी से तो अब अटेक (वार) नहीं होता किन्तु मानसिक अटेक तो हो जाते हैं।

दादाश्री : हो जाएँ तो हमें प्रतिक्रमण कर लेना है। वास्तव में तो ऐसा होता नहीं है, लेकिन ज़्यादा तप आ गए हों न तब ज़रा मानसिक अटेक हो जाएँ तो फिर प्रतिक्रमण करने हैं। इसे सम्यक् तप कहा जाता है। किसीकी भी दख़ल के बिना तप, हमें ये करते रहना है। ऐसा तप तो सभी को आता है, छुटकारा ही नहीं है न! एक बार तप करना पड़ता है ऐसी बाबत में, फिर उसके बाद वापस तप नहीं करना पड़ेगा। यानी, जितने तप कम हो गए उतना निबेड़ा आ गया।

भगवान महावीर को तो कर्मों को पूरा करने के लिए साठ मील पैदल चलकर अनाड़ी क्षेत्र में जाना पड़ा था। और आजकल के लोग तो पुण्यशाली हैं कि घर बैठे ही अनाड़ीक्षेत्र है। कितने धन्यभाग! ये तो अत्यंत लाभदायी है, कर्मों को पूरा करने के लिए, किन्तु यदि सीधे रहें तो।

तप का पुरुषार्थ शुरू करो

तप की बात आज निकली न, तो एक बार इस तप की बात पकड़ लो। तप का पुरुषार्थ शुरू कर दो। महावीर भगवानने इसे तप कहा है। मैंने भी

यही कहा है, लेकिन लोग ऐसा समझते हैं कि बाहर के तप किए बिना मोक्ष में कैसे जा सकते हैं? उसे तप (मोक्ष का) नहीं कहा जाता।

तप करने की भावना होती है किसीको? ऊँगली ऊपर करो, शूरवीर लगते हो। थोड़ी-सी शूरवीरता रखो। ऐसा संयोग फिर से मिलनेवाला नहीं है। ऐसे दर्शन फिर से मिलनेवाले नहीं है, ये दादा फिर से मिलनेवाले नहीं है।

प्रश्नकर्ता : 'ऐसे दादाजी फिर मिलनेवाले नहीं हैं', तो इस बात का मतलब हम क्या समझें?

दादाश्री : फिर नहीं मिलेंगे यानी अभी मिले हैं, तो उनके पास जितना सीखना हो उतना सीखकर काम निकाल लो। फिर से कोई इसके बारे में इस तरह एक अंक (अक्षर) भी नहीं सीखाएगा, किसके पास इतनी फुरसत होती है? कौन इतनी फुरसत में होता है? ऐसा तप करवानेवाला कौन होगा?

'बुलबुला' टूट जाए, उससे पहले.....

तप की बातें हम ज़्यादा नहीं बताते, (क्योंकि) मनुष्य की बिसात नहीं है। कभी-कभी ही ऐसी बात कहते हैं। मनुष्य की क्या बिसात है! सब्ज़ी बिगड़ गई हो तो पूरे दिन किच-किच करते रहते हैं। समभाव से *निकाल* यानी क्या? तप करना। तप करने से बदले में कितना बड़ा ऐश्वर्य प्रकट होता है। एक बड़ा साम्राज्य मिलता है! इस ओर का (रिलेटिव की ओर का) जितना जाने देते हो उतना ही बड़ा साम्राज्य मिलता है। और इसमें जाने देने जैसा है ही क्या? था ही नहीं कुछ आपका! अभी अगर मर जाओगे तो चार नारियल बाँधकर जल्दी से स्मशान में छोड़ आएँगे। कोई पूछनेवाला नहीं है। इसलिए काम निकाल लेना। इस जन्म में काम निकाल लेने की जगह मिली है, तो काम निकाल लो न! आपको नहीं निकालना है? तो खड़े होकर बोलो, शूरता से बोलो, यों (धीरे से) क्या बोलते हो! निकालना है या नहीं निकालना?

प्रश्नकर्ता : काम निकालना है, दादाजी।

दादाश्री : हाँ, तो फिर अब काम निकाल लो। बेकार ही मर जाओगे। कोई बाप भी देखने नहीं आएगा। अरे, देखने आएगा तो भी देह को देखेगा, आत्मा को थोड़े ही देखनेवाला है? बिना वजह हाय, हाय, हाय! अपनी दुनिया में हम सबने अनंत जन्मों से भिखारीपन ही किया था न! जिसके पास ज्ञान नहीं हो उसे ये सारी बातें नहीं कह सकते, एक शब्द भी नहीं कह सकते। (क्योंकि) वही उनका सर्वस्व है। जिसके पास ज्ञान है उसीसे ये सब कह सकते हैं, और तप भी वही कर सकता है। दूसरा कोई कर भी नहीं सकता न!

योग पूरा ही कर लो

पूरा ब्रह्मांड हिल जाए ऐसी शक्ति भीतर भरी हुई है। मैंने खुद देखा है, तभी तो मैंने खुला किया! किन्तु आप किन लालचों में पड़ गए हो? किसलिए? पूरा ब्रह्मांड सामने आए फिर भी उसकी लालच किसलिए? इसलिए ठीक से योग जमालो, रात और दिन! अब नींद कैसे आ सकती है? अब योग पूरा ही कर लो। दस लाख वर्षों के बाद सहजासहज ये योग प्राप्त हुआ है, बीवी-बच्चे, कपड़े-लत्ते के साथ। बार-बार ऐसा योग प्राप्त हो, ऐसा नहीं है। ये तो परमात्मा योग है! ये कोई ऐसा-वैसा योग नहीं है।

इक्यावन प्रतिशत पर काम निकाल लेना

मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि फिर से ये दादा मिलनेवाले नहीं हैं और दादा का ये ज्ञान भी मिलनेवाला नहीं है। ये अक्रम विज्ञान बार-बार देखने भी नहीं मिलेगा, इसलिए इक्यावन प्रतिशत पर (आज्ञा पालन करके) काम निकाल लेना। वर्ना इस दुनिया में कोई चारा नहीं है। अब तो इतना ही है कि मोक्ष के लिए

दूज का चंद्रमा हो गया है, अब उसकी तीज-चतुर्थी होनी चाहिए। इसलिए अब काम निकाल लो।

'दादा' की इस गाड़ी में से उतारकर बाहर कर दें, मारें, तो भी पीछे से घुस जाना। यहाँ से निकाल दें तो हमें दूसरे डिब्बे में घुस जाना है। फिर वहाँ से कोई निकाल दें तो तीसरे डिब्बे में चले जाना। फिर वहाँ से भी निकाल दें तो चौथे डिब्बे में जाना! लोगों का काम क्या है? निकाल देना। लेकिन हमें तो फिर से किसी डिब्बे में घुस जाना है। गाड़ी नहीं चूकनी है।

अमूल्य तक पूरी कर लो अब

लाखों जन्मों में भी ये सम्यक् दर्शन नहीं हो सकता, जो यहाँ सहजासहज मुफ्त में मिल गया है! आनंद में रहते हो, जप-तप कुछ भी किया नहीं है, त्याग नहीं किए हैं, पत्नी है फिर भी सम्यक् दर्शन मिल गया है! इसलिए ये अरमान है, वो अब पूरा कर लो। ये अमूल्य तक अक्रम की है।

मैंने कहा न, करोड़ों जन्मों में भी जो नहीं हो सकता, ऐसा यहाँ एक घंटे में होता है, इसलिए काम निकाल लेना। बार-बार ऐसा मेल बैठनेवाला नहीं है। फिर से ये दादा मिलनेवाले नहीं हैं। बाकी सबकुछ मिलेगा।

'सकल ब्रह्मांड झंखे ते ज्ञानवर्षा ने असह्य उनाळे'

पूरा ब्रह्मांड जिस 'ज्ञान' की वर्षा की इच्छा रखता है उस 'ज्ञान' की वर्षा हुई तो सही, किन्तु भयंकर गरमी में हुई! भयंकर दुषमकाल में 'ज्ञानवर्षा' हुई। जहाँ मनुष्य मात्र, साधु, आचार्य, सन्यासी, सभी तड़प रहे हैं, ऐसे काल में! वर्षाऋतु में वर्षा हो वो तो नियम के मुताबिक कहलाता है, किन्तु ये तो दुषमकाल की गरमी में जो संभव नहीं था, ऐसा हो गया है, नहीं होनेवाली वर्षा हो गई है, तो तब काम निकाल लेना चाहिए।

तार जोड़ा कि काम बन गया

हम ज्ञानीपुरुष परम सुखीया कहलाते हैं। सिर्फ नाम याद करते ही सुखी हो जाते हैं। तार जोड़ा कि काम बन गया। अब तार जोड़ना न, जब जोड़ोगे तब हम हाज़िर!

इस संसार की अड़चनों के लिए 'दादाजी' को याद करोगे तो भी अड़चन चली जाएगी। इतनी सारी सिद्धि लेकर आए हैं 'दादाजी'! अभी तक सभी की अड़चनें चली गई हैं। यदि सच्चे दिल से याद करेंगे, तो! इसलिए काम निकाल लो न! बार-बार ऐसा नहीं मिलेगा।

नियत में खोट मत रखना

ये 'दादा' एक ऐसे निमित्त हैं कि जैसे ही 'दादा' का नाम दें न, तो जो बिस्तर पर हो, जो चल-फिर नहीं सकते हों, वो भी चलने लगता है। इसलिए काम निकाल लो। ऐसे निमित्त हैं यह। आपको जो काम करना हो वो हो सके ऐसा है, किन्तु वहाँ अपनी नियत में खोट मत रखना। किसीके यहाँ शादी में जाने के लिए शरीर चलने लगे, ऐसा मत करना। यहाँ सत्संग में आने के लिए चलने लगे ऐसा करना। अर्थात् 'दादा' का उपयोग इस प्रकार अच्छे के लिए करना। उसमें फिर दुरुपयोग नहीं होना चाहिए। क्योंकि, दुरुपयोग नहीं होगा तो वह दादा फिर मुसीबत के समय काम आएँगे, इसलिए हमें यों ही उनका उपयोग नहीं करना है।

यह प्रत्यक्ष भीतर बैठे हैं, जो माँगो वो देनेवाले हैं। इस दुनिया की कोई भी चीज़ माँगो, अध्यात्म संबंधी, वे सारी चीज़ें, यहाँ केश बैंक के तौर पर रोकड़ी देते हैं। अपना ऐसा साइन्स (विज्ञान) है न। इसलिए काम निकाल लेना। मैं तो इतना ही कहूँगा, मैंने काम निकाल लिया है, आप काम निकाल लेना।

सावधान! फिर से ऐसा योग नहीं मिलेगा

नहीं समझने के कारण पूरा जगत् उलझ ही गया है न? मेरी उलझन सुलझ गई है ऐसा मैं ही जानता हूँ न! और जब आपकी उलझन सुलझ जाएगी उसके बाद आपकी स्थिति बदलेगी!

ये *निर्भेळ* (बिना मिलावट का) सत्य है। *निर्भेळ* सत्य यानी व्यवहार का सत्य है और *निर्भेळ* सत् भी है, अर्थात् ये आत्मा भी *निर्भेळ* है। इसलिए यहाँ काम निकल जाएगा, इतना मैं आपसे कहूँगा। मेरा काम निकल गया है और आपसे भी कहता हूँ कि आप सब भी काम निकाल लो। बार-बार ये योग आए ऐसा नहीं है, अक्रम विज्ञान।

द्रढ़ निश्चय से निकाल लेना काम

इतना सरल कभी भी उत्पन्न हुआ नहीं है, फिर भी लोग सरलता का लाभ नहीं लेते। क्या करें? कितना सरल है! आप जब मेरे साथ गाड़ी में बैठे थे, तब बातचीत नहीं करते तो नहीं चलता? शुद्ध उपयोग से सबके दर्शन करते-करते जातें। किन्तु ऐसा द्रढ़ निश्चय नहीं है, ऐसा कुछ भी नहीं है न! वर्ना घर जाकर निश्चय करता और इस तरह कभी उपयोग बाहर जाए न तो प्रतिक्रमण करता। वर्ना ऐसी स्थिति होती? ये तो काम निकाल दे ऐसी स्थिति है। उपयोग बाहर गया, कि प्रतिक्रमण करना है।

बहुत ही जागृति की ज़रूरत है, संपूर्ण जागृति! जागृति पर जागृति, जो अंतिम प्रकार की जागृति है, वह हमारे यहाँ है! जगत् जहाँ जागता है वहाँ हमें सोते रहना चाहिए। हम जहाँ जागते हैं वहाँ जगत् सो ही रहा है। केवळज्ञान यानी संपूर्ण जागृति! कोई कमी नहीं रहे ऐसी जागृति! बस, जागृति की ही ज़रूरत है। जितनी जागृति बढ़ी उतना केवळज्ञान के नज़दीक आया। जागृति में खुद के सारे दोष दिखते हैं, किन्तु खुद निष्पक्षपाती हुआ हो, तो! खुद शुद्धात्मा हुआ यानी निष्पक्षपाती हुआ।

अपने ज्ञायक स्वभाव में रहना उसे पुरुषार्थ कहते हैं। और कर्म के ज़ोर पर दूसरी तरफ़ खींचे चले जाना, वहाँ खुद धक्का नहीं मारता, और खुद संपूर्ण खींचा चला जाता है, वो प्रमाद है।

प्रश्नकर्ता : किन्तु उसका भी ज्ञाता-दृष्टा रहे तो?

दादाश्री : तब तो फिर हो गया, बस इतना ही, खुद के स्वभाव में रहे। इस प्रकार रहने की ज़रूरत है। खुद का स्वभाव ही है। किन्तु ये शुद्ध उपयोग समझ ले न तो काम बन गया। शुद्ध उपयोग मनुष्य समझ नहीं सकता, क्योंकि सामनेवाला निर्दोष दिखता ही नहीं है। दोषित व्यक्ति निर्दोष दिखे, वह शुद्ध उपयोग।

उठा लो ये अंतिम मौका

हमारे पास जो ज्ञान सुना है न, वो ज्ञान ही काम करता रहता है। हम जिस राह चले उस राह का ज्ञान आप सुनते हो, वही राह आपका काम निकाल देगी। आपको तो कहना है कि, 'दादा, आपके पीछे-पीछे आना है', फिर हम आपको अपनी राह दिखा देते हैं।

'दादा' जिस राह पर चले हैं, वही राह आपको बताई है। उसी राह पर 'दादा' आपसे आगे हैं। राह मिलेगी या नहीं मिलेगी?

प्रश्नकर्ता : मिलेगी।

दादाश्री : सौ प्रतिशत? पक्का?

प्रश्नकर्ता : हाँ, सौ प्रतिशत, पक्का!

दादाश्री : 'दादा' तो सारे रोग निकालने आए हैं। क्योंकि, 'दादा' संपूर्ण निरोगी पुरुष हैं। उनके आधार पर जो रोग निकालने हों, वे चले जाएँगे। संसार का एक भी रोग उनमें नहीं है।

'यह' पब्लिक ट्रस्ट ऐसा है कि संपूर्ण निरोगी

है। वर्ल्ड का टॉपमोस्ट है यह! आपको जो रोग निकालने हों वे निकाल सकते हैं ऐसा है!

इसलिए हम आपसे कहते हैं कि फिर आप खुद पोल मारोगे (ढीला छोड़ोगे) तो आपको मार पड़ेगा। हम आपको सावधान कर देते हैं। अभी रोग निकलेगा, बाद में नहीं निकलेगा। यदि मुझमें ज़रा-सी भी पोल होती तो आपका रोग नहीं निकलता। हिंमत आ रही है (रोग निकालने की)?

प्रश्नकर्ता : दो दिनों से, जब से आपने ये कहा है न, तो ऐसा लगता है कि जैसे पराक्रम उत्पन्न हो गया है, कि जितनी पोलम्पोल चलती थी वो सारी बंद हो गई है।

दादाश्री : हाँ, बंद हो जाती है। वो तो दादा के शब्दों से, सारी पोलम्पोल बंद हो जाती है। आप (ऐसा सुंदर) सँभालकर रखो तो बहुत अच्छा है। भीतर चौकस और इसमें भी चौकस, किन्तु इतना है कि यदि इसमें चौकस रहे तो इसमें फर्स्ट क्लास हो जाए। ये भी एक प्रकार की निपुणता है! और वो भी अगर कहे अनुसार करें, तो। बार-बार ये मौका नहीं मिलेगा। यह अंतिम मौका है। उठा लो यह अंतिम मौका।

ज्ञानी के पीछे-पीछे चले जाओ

मेरा तो ये सारा अनुभवपूर्वक का ज्ञान है। मैंने तो सारे अपने अनुभव ही आपके सामने रखे हैं, और वो भी 'अप्रोप्रिएट' (उपयुक्त)! मेरी क्षण-क्षण की जागृति के अनुभव रखे हैं। और ये सिर्फ अभी की 'लाइफ' का नहीं है, किन्तु अनंत जन्मों की 'लाइफ' का है! और वो भी फिर मौलिक है। शास्त्रों में ये बातें नहीं मिले तो हर्ज नहीं है, लेकिन ये मौलिक है!

इसलिए मैं आपसे कहता हूँ न, कि मेरे पीछे-पीछे चले आओ। आगे निकल जाओ तो हर्ज नहीं है, किन्तु बहुत पीछे मत रह जाना, ऐसा कहता हूँ।

प्रश्नकर्ता : पीछे रहें उतना बस है दादाजी।

दादाश्री : नहीं। मतलब ज़्यादा पीछे मत रह जाना। मुझे राह नहीं देखनी पड़े। ऐसे पीछे देखूँ तो दिखे, सभी दिखने चाहिए। आगे निकल जाओ तो हर्ज नहीं है। आगे निकल जाओ तो मैं तो लगाम भी दे देने को तैयार हूँ। मुझे तो उसमें कुछ भी नहीं है और वो जो लगाम है उसे भी देने को तैयार हूँ।

परिचय में रहकर ज्ञान को समझ लो

प्रश्नकर्ता : आप बहुत बार कहते हो कि हमारी हाज़िरी में प्रत्यक्ष कर लो (काम निकाल लो)।

दादाश्री : यही हम कहते हैं न, कि हमारी हाज़िरी में प्रत्यक्ष यानी, आपको अपना जो अनुभव हुआ हो, उस अनुभव से आपको उलझन रहती हो तो हमसे पूछ लो जिससे आपके अनुभव की उलझन निकल जाएगी। फिर वो अनुभव आपको फिट हो गया। बस यही कर लेना है। हमारे पास अनुभव का स्टॉक (भंडार) है। और आपको अनुभव अब होते जा रहे हैं। ये सही है या वो सही, ऐसा पूछ लिया, तो निबेड़ा आ गया।

आपका आत्मानुभव भी आपकी दृष्टि से सही है, गलत नहीं है। किन्तु अंश अनुभव है। और अक्रम के द्वारा आपको सहज प्राप्त हो गया है न! आपको इससे लाभ तो होगा, किन्तु अभी और प्रगति करोगे वैसे-वैसे अनुभव बढ़ता जाएगा। जैसे-जैसे जागृति उत्पन्न होगी उसके बाद पूरी बात समझनी पड़ेगी। परिचय में रहकर पूरा ज्ञान समझ लेना है।

इस ज्ञान में हमने जो देखा है वो हक़ीक़त हमारे पास है। 'ज्ञानीपुरुष' कभी-कभार मिलते हैं, तब जो पूछना है वो पूछ लो, तब अपना काम नहीं निकाल लें तो क्या फ़ायदा? 'ज्ञानीपुरुष' यानी जिन्हें कुछ भी जानना बाकी नहीं होता।

मूलत: वस्तुस्थिति में मैं क्या कहना चाहता हूँ इसे यदि समझ ले न, तो कल्याण हो जाए। हर एक वाक्य में, मैं क्या कहना चाहता हूँ वो पूरी बात अगर समझ ली जाए तो कल्याण हो जाए।

सारभूत ढूँढकर समझ लो

हमारी बातों में से सारभूत ढूँढ निकालना है कि इसमें सारभूत क्या है? इतना वाक्य हमें पकड़ लेना है।

मैं जो कहना चाहता हूँ उसे समझ लेना, यानी मैं क्या कहना चाहता हूँ वो 'फुल्ली' (पूरी तरह) समझ में आ गया। और 'टू धी पोइन्ट' पहुँच जाए, उसे मैं समझना कहता हूँ। लोग क्या ऐसा नहीं कहते कि, 'अभी समझ में नहीं आया?'

यानी, 'मैं' समझाना चाहता हूँ, वही 'वस्तु' उसे उसी स्वरूप में समझ में आ जाए, उसे समझ में आना कहते हैं। मेरा 'व्यू-पोइन्ट' अलग और उनका 'व्यू-पोइन्ट' अलग, इसलिए समझ में आते देर लगती है। किन्तु समझ में आना चाहिए, तो काम बनेगा।

यानी समझ में आए बिना तो कोई काम होता ही नहीं। यहाँ पर भी सभी की समझ में ही आता है न! समझ में आया, कि फिर (काम) शुरू हो गया।

जो बात समझ में आ गई वो फिर हमेशा के लिए रहती है और मैं तो अंतिम बात कहता हूँ। इससे आगे की नई बात किसी भी जगह पर नहीं निकलेगी। अंतिम बात के आगे फिर कोई अंतिम बात होती ही नहीं है न!

ये 'अक्रम-विज्ञान' है। ये तो बहुत अद्‌भूत विज्ञान है। जगत् जब इसे जानेगा तब नाचने लगेगा।

इस जन्म में पूरा कर लो

यह अक्रम विज्ञान इतना फलदायी है, एक मिनट के लिए भी टाइम कैसे गँवा सकते हैं? ऐसा योग फिर से किसी जन्म में नहीं होगा। इसलिए इस जन्म में पूरा कर लेना है।

ये, 'एडमिशन' लेने गए और ले लिया इतना काफ़ी नहीं है, और 'एडमिशन' लेकर फिर आए ही नहीं ये भी काफ़ी नहीं है। ये तो पूरा कर लेने जैसा है। ये एक 'कॉर्स' पूरा कर लेने जैसा है। अनंत जन्मों से ये 'कॉर्स' पूरा नहीं किया है, और यदि किया होता तो निर्भयता! उसकी तो बात ही अलग है न!

प्रश्नकर्ता : दादाजी, ये पूरा कर लेने को कहा, वो किस तरह?

दादाश्री : हम जब तक हैं तब तक टाइम दूसरी जगह (बातों में) बिगाड़ना नहीं चाहिए। हम बड़ौदा जाएँ तो जिनके संयोग अनुकूल हों और पैसे हों, तो उन्हें वहाँ पर आना चाहिए। जितना हो सके उतना हमारा ज़्यादा समय लेना चाहिए। सिर्फ हमारे सत्संग में आकर बैठे रहना है। और कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है!

रहना 'दादाजी' की वीसीनीटी में

यहाँ बैठे, तो कुछ भी नहीं करो फिर भी भीतर बदलाव होता ही रहता है। क्योंकि सत्संग है। सत् यानी आत्मा, उसका संग! जो प्रकट हुआ है, वो सत्! और उसके संग में बैठो तो अंतिम सत्संग कहलाता है। दूसरे सारे भी सत्संग तो हैं, किन्तु अंतिम सत्संग नहीं हैं। उदाहरण के तौर पर, बोम्बे सेन्ट्रल आ गया, फिर गाड़ी यहाँ से आगे नहीं जाएगी।

प्रश्नकर्ता : महात्माओं को कौन-सी ग़रज़ रखनी चाहिए, पूर्ण पद के लिए?

दादाश्री : जितना हो सके उतना दादा के पास ही जीवन बिताना, वही ग़रज़, दूसरी कोई ग़रज़ नहीं। रात-दिन, चाहे कहीं भी, किन्तु दादा के पास

ही रहना। उनकी वीसीनीटी में (दृष्टि पड़े उस तरह) रहना।

प्रश्नकर्ता : आपकी हाज़िरी में विशेष शांति बरतती है।

दादाश्री : इस हाज़िरी की तो बात ही अलग है न! ये तो मेरी हाज़िरी आपको दिखती है, किन्तु मुझे जिसकी हाज़िरी दिखती है, वो हाज़िरी आपको भी बरतती है। चौदह लोक का नाथ, पूरे ब्रह्मांड का नाथ भीतर प्रकट हो गया है, उनका मुझे भी लाभ मिलता है और आपको भी लाभ मिलता है। ऐसी निकटता होनी चाहिए, बस! जितना निकट उतना लाभ और आसपास का वातावरण तो अच्छा रहता ही है! किन्तु निकटता का लाभ मिलता है, और वो भी फिर समझकर, बिना समझे लाभ नहीं मिलता।

पाप धुलते हैं ज्ञानीपुरुष के दर्शन से

हमारे पास आओ न, तो यहाँ तो हृदय में ही पैठ जाता है सब। सम्यक् बुद्धि हुई कि एकदम सब हृदय में ही पैठ जाता है। क्योंकि, हमारी वाणी कैसी होती है? हृदय को स्पर्शती हुई!

प्रश्नकर्ता : हृदय तक पहुँचने के लिए सत्संग और दर्शन की ज़रूरत है न?

दादाश्री : हाँ, दर्शन और सत्संग की ज़रूरत है। ये दर्शन तो काम निकाल देते हैं। यदि हमारे दर्शन करे न, तो बहुत काम निकल जाता है।

ये दर्शन करने से मन अच्छा होता है, मन मज़बूत बनता है, वाणी अच्छी होती है, विचार अच्छे होते हैं, दर्शन से ही पाप धुल जाते हैं। ज्ञानीपुरुष की हाज़िरी से ही परिवर्तन आ जाता है। कोई उपदेश नहीं दिया है, फिर भी वातावरण से ही परिवर्तन हो जाता है। उनका वर्तन मनोहर होता है, वाणी मनोहर होती है, उनका विनय भी मनोहर होता है। मनोहर अर्थात् हमारे मन का हरण कर ले ऐसा होता है।

प्रश्नकर्ता : सदैव आहलाद्कर, ज्ञानीपुरुष का।

दादाश्री : हाँ, आहलाद्कर। हाँ, हृदय का आहलाद्कर।

अर्थात् शास्त्रों को सीखने की ज़रूरत नहीं है, 'दादा' (उनके विज्ञान को) को सीखने की ज़रूरत है। दादा को देखते ही रहना है। देखने से एक ही जन्म में पूरा द्रव्य परिवर्तन हो जाता है। सिर्फ देखने से ही ऐसे भाव होते हैं कि, 'ऐसी वाणी, ऐसा वर्तन, ऐसा मन!' मतलब हमारे भी ऐसे भाव हो जाते हैं! और ये सब (पिछला भरा हुआ माल) तो पिघल जानेवाला है।

ज्ञानी के परिचय की स्ट्रोंग भावना

सत्संग में पड़े रहने से ये सबकुछ खाली हो जाएगा। क्योंकि साथ में रहने से, हमें देखने से हमारी डिरेक्ट (सीधी) शक्तियाँ प्राप्त होती हैं, इसलिए जागृति एकदम बढ़ जाती है!

काम निकाल लेना है। फिर भले ही हमारा मन दबीज़ (मोटा) हो, तो हमें ज़्यादा देर के लिए बैठे रहना है। किन्तु हल ला दो न! कलियुग का माल है न, इसलिए बहुत माल भरा हुआ होता है। हमें तो ये ज्ञान प्राप्त हुआ वही हमारा बड़ा पुण्य है, जबरदस्त पुण्य है।

ज्ञान मिला उसका अर्थ ये है कि हम लोक-परिचय से मुक्त हो गए। फिर भी हमारी ऐसी स्ट्रोंग (द्रढ़) भावना होनी चाहिए कि ज्ञानी का परिचय मिलना चाहिए। निरंतर, आते-जाते किसी भी समय, जितना ये परिचय उतना लाभ!

काम निकाल लो, ज्ञानी संग सत्संग से

स्कूल में गए थे या नहीं गए थे? कितने वर्षों के लिए गए थे?

प्रश्नकर्ता : दस वर्षों के लिए।

दादाश्री : तो फिर वहाँ क्या सीखे? भाषा! ये अंग्रेजी भाषा के लिए दस वर्ष निकाल दिए, तब यहाँ मेरे पास तो छह महिने ही कहता हूँ। छह महिने मेरे पीछे घूमे न तो काम बन जाए।

कॉलेज़ में डिग्री प्राप्त करने के लिए कितने वर्षों तक गए थे?

प्रश्नकर्ता : छह वर्षों तक।

दादाश्री : उतने वर्षों की मुझे ज़रूरत नहीं है। मैं तो कहता हूँ कि छह महिनों के लिए ही आप मेरे साथ रहो न, बहुत हो गया!

प्रश्नकर्ता : आपके पास छह महिनों तक बैठें, तब उसका स्थूल परिवर्तन होता है, बाद में सूक्ष्म में परिवर्तन होता है, ऐसा कहना चाहते हैं।

दादाश्री : हाँ, सिर्फ बैठने से ही परिवर्तन होता रहता है।

प्रश्नकर्ता : स्थूल परिवर्तन यानी क्या?

दादाश्री : स्थूल परिवर्तन यानी बाहर के भाग की उसकी सारी मुसीबतें उड़ गई, सिर्फ अंदर की बाकी रही। यदि फिर से उतने समय के लिए सत्संग में रहे तो अंदर की मुसीबतें भी उड़ जाती हैं। दोनों खत्म हो गई, तो संपूर्ण हो गया। इसलिए ये परिचय करना चाहिए। दो घंटे, तीन घंटे, पाँच घंटे, जितने जमा किए उतना तो लाभ मिलेगा।

काम निकाल लो ज्ञानी के दर्शन से

सत्संग की तरफ़ रहें ऐसा करना चाहिए। 'इस' सत्संग की अधिकता में रहें तो काम बन गया।

'काम निकाल लेना' यानी हमारी आज्ञा में ठीक से रह सकते हों, तो दो-चार महिनों में एक बार आकर दर्शन कर लें तो चलता है और यदि नहीं रह सकते तो रोज़, बार-बार यहाँ आकर दर्शन करने चाहिए।

काम निकाल लेना यानी क्या? जितने हो सके उतने ज़्यादा दर्शन करने चाहिए। जितना हो सके उतना सत्संग में रूबरू का लाभ लेना चाहिए, हाज़िरी का सत्संग। ऐसा नहीं हो सके तो फिर खेद तो रखना चाहिए। ज्ञानीपुरुष के दर्शन करने चाहिए। और उनके पास, उनके संग में बैठे रहना चाहिए। उनको देखते रहने से बहुत सा काम हो जाएगा न!

संसारी चीज़ों का डीवैल्युएशन करो

संसारी चीज़ों पर जो भाव है, उनका डीवैल्युएशन (अवमूल्यन) करते जाना चाहिए, तो (दादाजी के) साथ रह सकते हैं न!

प्रश्नकर्ता : हाँ, सही बात है। डीवैल्युएशन करें तो होगा।

दादाश्री : ब्रिटिश गवर्नमेन्ट इतने बड़े पाउन्ड का डीवैल्युएशन करती है। तो हमें उसमें क्या हर्ज है? उसमें हमें क्या फ़ायदा है? रोज़ समाचार में आता है, कि दस पैसे डीवैल्युएशन हो गया। तो क्या उनको अच्छा लगता होगा? क्या कर सकते हैं? ऐसे संयोग खड़े हो जाएँ तब क्या कर सकते हैं?

राह पर नहीं आए तब तक आसरा लेना

ज्ञान मिलने के बाद लोग ऐसा समझ लेते हैं कि अब हमारे लिए कोई काम तो बचा ही नहीं! किन्तु (अभी तक) परिवर्तन तो हुआ ही नहीं है।

कई लोगों को तो राह पर आ गया इसलिए यहाँ ज़्यादा नहीं आते। कभी-कभी आते हैं। खुद को चाहिए था वो हो गया न! उनसे हमने कहा ही है, कि राह पर आ जाए तब तक यहाँ पर चक्कर लगाते रहना। फिर भी, ज्ञानी के पास बैठें इसके जैसी उत्तम वस्तु ही दूसरी नहीं है। इसके बावजूद भी नहीं बैठ सकें तो कोई हर्ज नहीं है। किन्तु राह पर आने तक

तो ऐसी भावना ज़्यादा रखनी चाहिए। संयम परिणाम खड़े नहीं हों, तब तक राह पर आया नहीं कहलाता।

संयम परिणाम उत्पन्न होने का मुख्य साधन ही ज्ञानीपुरुष हैं। ये तो ठेठ तक का काम निकाल लेना है। शास्त्रकारों ने तो ज्ञानीपुरुष के पीछे पड़े रहने को कहा है, किन्तु आजकल तो इतनी सारी फाइलें होती हैं, तो वह किस तरह (हमारे) साथ रहेगा? किन्तु भावना करनी चाहिए, फिर हमें जितना समय मिले उतना सही! और संयम सुख, इसके बारे में तो कुछ कहने जैसा ही नहीं है! पूरी ज़िन्दगी में कभी भी नहीं देखा हो, ऐसा संयम सुख उत्पन्न होता है।

आज दो घंटे बैठा और फिर जल्दबाज़ी करे और दूसरे दिन भी दो घंटे बेकार जाएँ, उसके बजाय लंबे समय तक अखंड बैठा रहे न तो हल आ जाएगा। अनंत जन्मों का सारा नुकसान भरपाई हो जाता है।

अनंत जन्मों का घाटा चुका दो

अनंत जन्मों का घाटा एक जन्म में पूरा करना है। इसलिए सावधानी तो रखनी पड़ेगी न? कितने जन्मों का घाटा है? अनंत जन्मों का घाटा!

अनंत जन्मों का घाटा है न, तो एक ही जन्म में घाटा पूरा करना हो तो क्या करना पड़ेगा? दादाजी के पीछे पड़ना चाहिए। दादाजी नहीं हों, तो उनके कहे हुए शब्दों के पीछे पड़ना चाहिए। उनके पीछे पड़कर अनंत जन्मों का घाटा एक जन्म में पूरा कर देना है। अब तक हम लोगों ने अनंत जन्म लिए, वो सारा घाटा ही है न? वो घाटा पूरा करना पड़ेगा या नहीं करना पड़ेगा?

नियाणां कर लो मोक्ष का

अब तो यही निश्चय करना है कि, सिर्फ यही, और कुछ नहीं। मोक्ष का *नियाणां* (अपना सारा पुण्य लगाकर किसी एक वस्तु की कामना करना) कर लेना है जिससे ज़्यादा जन्म लेने नहीं पड़े।

सभी जन्मों में भटक-भटककर आया है, कहीं भी सच्चा सुख मिला नहीं है। वहाँ पर अहंकार की गर्जनाएँ और विलाप ही किया है। छूटने की इच्छा तो है किन्तु मार्ग नहीं मिलता। मार्ग मिलना अति-अति दुर्लभ है। 'इस ज्ञानीपुरुष' का संयोग प्राप्त होना ही कठिन है। सारे संयोग इकट्ठे होकर बिखर जाएँगे किन्तु ज्ञानीपुरुष के संयोग से 'हमेशा की ठंडक' प्राप्त होती है। अब तो काम निकाल लेना है। ज्ञानीपुरुष के पास ही पड़े रहना है, ऐसी भावना से पराक्रम उत्पन्न होता है। फिर चाहे कोई भी संयोग आए तो भी पराक्रम से पार उतर सकते हैं।

यहाँ तो अपना मन इतना मज़बूत कर लेना है न कि, ''इस जन्म में चाहे जो भी हो, भले ही देह चला जाए, किन्तु इस जन्म में कुछ 'काम' कर लूँ'', ऐसा तय कर लेना चाहिए। फिर अपनेआप काम होगा ही। हमें अपनी तरफ़ से तय करके रखना चाहिए। अपनी तरफ़ से ढीला नहीं छोड़ना चाहिए। ऐसा प्राप्त हुआ हो तब ढीला नहीं छोड़ना चाहिए। फिर जो हुआ वो सही। उसके लिए झंझट नहीं रखनी है और नहीं हुआ उसके लिए भी ज़्यादा झंझट नहीं रखनी है। सबकुछ मिल जाएगा।

आत्मस्वरूप हो गए तो काम बन जाएगा

(ज्ञान मिलने के बाद) निःशंक तो हो गए, अब आज्ञा में रहो। बूढ़ापे को निकाल दो। ये देह चला जाए तो भले ही चला जाए, कान काट लें तो भले ही काट लें, *पुद्गल* (जो पूरण और गलन होता है) को तो फेंक ही देना है। *पुद्गल* पराया है। पराई वस्तु अपने पास रहनेवाली नहीं है। वो तो जब उसका टाइम आए, व्यवस्थित का टाइम आए, उस दिन भले ही चली जाए। भय रखने जैसा नहीं है। हम कहें ले लो, तो लेने के लिए कोई फ़ालतू बैठा

नहीं है, किन्तु ऐसा करने से हम में निर्भयता आती है। 'जो होना है सो हो', कहना है।

आत्मा के अलावा सारी सड़ी हुई वस्तुएँ हैं। सिर्फ आत्मा सड़ता नहीं है। उसे कुछ भी नहीं होता, ऐसा है। इसलिए हम आत्मस्वरूप हो गए तो काम बन जाएगा। वर्ना सारा काम व्यर्थ है। आत्मस्वरूप होने की ज़रूरत है, और कुछ नहीं। ये देह कट जाए या कुछ भी हो जाए, हमें देहस्वरूप नहीं होना है। परक्षेत्र में घुसे, तो संसार कड़वे ज़हर जैसा लगता है।

अब देह से हमें कहना है कि, 'तुम्हें जाना है तो जाओ, हम हमारे मुक़ाम में रहेंगे।' उसके लिए ज़्यादा परेशान मत होना। अनंत जन्मों से देह का ही प्रसव (देखभाल) करते रहे हैं। एक जन्म के लिए 'ज्ञानीपुरुष' को देह सौंप दे और प्रसव नहीं करें, तो हो गया, चोखा हो गया।

देह को सँभालकर भी काम निकाल लो

जिस देह से आत्म कल्याण नहीं हुआ वो सारा मार्केट मटिरियल (बगैर क़ीमत का) है। जिस देह से ज्ञानीपुरुष को पहचाना, उस देह को दवाईयाँ खिलाकर, उसे पलंग में सुलाकर भी अच्छा रखना चाहिए।

ये चंदूभाई नाम का देह, हमारे लिए महामित्र समान बन गया है, कि जिस देह से हमने आत्मज्ञानी को पहचाना और हमें अक्रमज्ञान प्राप्त हुआ और वो अनुभव में सिद्ध हुआ। इसलिए अब इस देह से कहना है कि, 'हे मित्र, तुम्हें जो दवाई चाहिए वो मैं करूँगा, भले ही हिंसक दवाई हो पर उसे खाकर भी तू ज़िंदा रहे।' ऐसी हमारी भावना होनी चाहिए। ऐसे तो कितने ही देह गए, सारे देह व्यर्थ गए न! अनंत जन्मों से देह व्यर्थ गए। किन्तु इस देह ने तो हमें यथार्थ फल दिखाया न! और चंदूभाई के नाम पर दिखाया न! इसलिए इस देह को सँभालना, किन्तु अब काम निकाल लो।

समझ में नहीं आए तो सबसे अच्छी शरण ये है, कि जो दादाजी का हो वह मेरा हो। दादाजी के कहे अनुसार रहना। वो कहें, खड़े हो जाओ, तो खड़े हो जाना। वो कहें, 'शादी मत करना', तब कहे, 'नहीं करूँगा'। वो कहें, 'दो शादियाँ करो', तो कहना, 'दो शादियाँ करूँगा।' तब ऐसी दख़ल मत करना कि साहब, शास्त्रों में तो मना किया है और आप दो शादियाँ करने को कहते हो? ऐसा कहोगे तो मोक्ष के लिए तुम अनफ़िट हो गए।

विज्ञान हाथ में आया है तो पूरा कर लो

ये तो अलौकिक विज्ञान है। ये कोई धर्म नहीं है, विज्ञान है। तुरन्त ही फल देनेवाला है। इसलिए कहते हैं कि अब काम निकाल लो।

अक्रम विज्ञान का कितना बड़ा आश्चर्य है कि व्यक्ति को पॉज़िटिव साइड (सकारात्मक दिशा) में रख देता है! पॉज़िटिव साइड में आते-आते तो मनुष्य के करोड़ों जन्म हो जाते हैं। ये नेगेटिव धीरे-धीरे निकालते, निकालते, निकालते, कब अंत आएगा!

प्रश्नकर्ता : जितने समय के लिए नेगेटिव भरते रहे हो, उतना ही समय लगता है।

दादाश्री : इतना सारा समय, बस उसमें ही जाता है। और दोस्त भी नेगेटिववाले मिल जाते हैं। रिश्तेदार, दोस्त, सारे उल्टे संयोग, सभी नेगेटिववाले मिल जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : सारा नेगेटिव में।

दादाश्री : अक्रम विज्ञान से पूरा नेगेटिव पोर्सन (नकारात्मक भाग) ही उड़ गया। ये कोई ऐसी-वैसी वस्तु है! जब तक देहाध्यास हो, तब तक नेगेटिव साइड ही होती है। अब पूरा नेगेटिव चला गया। एक व्यक्ति के लिए ज़रा-सा खराब विचार आना, वो भी नेगेटिव है। हमें गाली देता हो, उसके लिए खराब

विचार आए, वो भी नेगेटिव कहलाता है। वो भी फिर उस व्यक्ति पर नहीं पहुँचता, भगवान पर पहुँचता है। उसके अंदर भी भगवान तो हैं ही न? इतनी ज़्यादा जिम्मेदारी उठानी पड़ती है। इसलिए कहते हैं कि ये (विज्ञान) हाथ में आ गया है तो पूरा कर लो और काम निकाल लो। चाय पीते हैं उसमें हर्ज नहीं है। स्टेशन पर पकोड़े खाते हो उसमें भी हर्ज नहीं है। किन्तु इतना ध्यान में, लक्ष्य में रखना कि ये जो सामान है वो पूरा काम निकाल लेने जैसा है। और फिर वो हमारे अनुभव में आया है कि ये नेगेटिव की ओर नहीं जाता।

समाधान से बरतो सदा जागृत

'ये' तो काम निकाल लेने की जगह है। 'ये' कोई धर्म का स्थल नहीं है। अपना हर एक प्रकार का काम होता है। मोक्ष हाथ में आ जाए, वहाँ काम पूर्ण हो जाता है। जहाँ सर्व समाधानी ज्ञान है कि जो किसी भी संयोग में, किसी भी स्थिति में समाधान ही देता है। समाधान होना ही चाहिए।

असमाधान नहीं रहना चाहिए, उसे अक्रम विज्ञान कहते हैं। निरंतर समाधान रहना चाहिए। कोई गालियाँ दे तो भी समाधान रहना चाहिए, जेब कट जाए तो भी समाधान रहे, फूल चढ़ाएँ तो भी समाधान रहना चाहिए।

यदि ये ज्ञान समाधान नहीं करवाए तो उसका अर्थ ये हुआ कि आपको समाधान करना आता ही नहीं है, वर्ना समाधान अवश्य होना ही चाहिए। हमारी आज्ञा में रहे तो समाधान होता ही है। यहाँ पात्रता, अपात्रता नहीं देखनी है।

अब हम अपना काम निकाल लें

ऐसा कभी हुआ ही नहीं है। ये नये प्रकार का ही है। इसलिए हमें अपना काम निकाल लेना है।

हम एक ही बात करते हैं, काम निकाल लेना। अलग ही प्रकार का हुआ है यह, जो नहीं हो सकता ऐसा हो गया है और वो भी दुषमकाल में! दुषमकाल यानी दुःखमय काल। मुख्यतः दुःख ही होता है, ऐसे काल में ये हुआ है तो हमें अपना काम निकाल लेना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : जगत् माने या न माने, वो अलग बात है। बाकी अनंतकाल में भी 'यह' मिले ऐसी चीज़ नहीं है।

दादाश्री : अनंत काल में भी प्राप्त नहीं हो, ऐसी वस्तु है यह। ये दस लाख वर्षों के बाद प्रकट हुआ है! इसलिए हमें अपना काम निकाल लेना है। मैं क्या कहना चाहता हूँ? काम निकाल लो।

जय सच्चिदानंद

'दादावाणी' पत्रिका के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA11250 # और यदि लेबल पर ग्राहक नं. के बाद ## हो तो अगले महीने आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. DHIA11250 ##. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. १ पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी अवश्य दें।

मुख्य सेन्टरों के संपर्क : अडालज त्रिमंदिरः (079) 39830100, **अहमदाबाद (दादा दर्शन):** (079) 27540408,
वडोदरा (दादा मंदिर): (0265)2414142, **राजकोट त्रिमंदिरः** 9274111393, **भूज त्रिमंदिरः** (02832) 290123,
गोधरा त्रिमंदिरः (02672) 262300, **मुंबईः** 9323528901, **दिल्लीः** 9310022350, **बैंगलूरः** 9590979099, **कोलकताः** 033-32933885
यु.के.: +44-7956476253, **यु.एस.ए.:** +1-877-505-3232, **आस्ट्रेलियाः** +61 421127947, **केन्याः** +254 722722063

With Param Pujya Dada Bhagwan's infinite grace, Pujya Niruma's blessings and in the presence of Atma Gnani Pujya Deepakbhai Desai, We all mahatma pariwar of Dallas invite you and your family to attend and participate in the grand celebration of Param Pujya Dada Bhagwan's Gurupurnima.

With Param Pujya Dada Bhagwan in our hearts and his love for all in our eyes, we offer our greetings and namaskars to The Divine within you. On his behalf, with a deep sense of gratitude and humility, we accept the high privilege of hosting this celebration of The Self, The awakened Guru.

Jay Sachchidanand.

Date	Spiritual Discourses	Morning Session	Evening Session
Fri. June 29, 2012	GP Shibir	10:00 to 12.30 pm	4:00 to 6:30 pm
Sat. June 30, 2012	GP Shibir	10:00 to 12.30 pm	4:00 to 6:30 pm
	Aptaputra Satsang	-	4:00 to 6:30 pm
Sun. July 1, 2012	Satsang	10:00 to 12.30 pm	-
	GNANVIDHI	-	4:30 to 7:30 pm
Mon. July 2 2012	GP Shibir	9:30 to 12.00 pm	4:00 to 6:30 pm
Tue. July 3, 2012	GURUPURNIMA	8:00 to 12.00 pm	4:00 to 7.00 pm
Wed. July 4, 2012	GP Shibir	9:30 to 12.00 pm	4:00 to 6:30 pm

Satsang Venue

Hyatt Regency DFW, 2334 North International PKWY, DFW Airport, TX 75261.

Free Parking for attendees.

Co.: 1-877-505-DADA(3232) Ext 10, Email: gp@dadabhagwan.org, Visit: www.dadabhagwan.org

Pujya Deepakbhai's USA-Canada Satsang Schedule 2012

Contact telephone no. for all centers in USA & Canada: 1-877-505-DADA (3232), email:usa@dadabhagwan.org

Date	Day	Venue	Program	From	To	Venue	Email/Tel Extension
2-Jun	Sat	Philadelphia	Satsang	4.30 PM	7.00 PM	Radisson Hotel Philadelphia Northeast 2400 Old Lincoln Highway @ US Route 1,Trevose,PA,19053	eksoul@hotmail.com Tel. Ext: 1002
3-Jun	Sun	Philadelphia	Aptaputra Satsang	10.00 AM	12.30 PM		
3-Jun	Sun	Philadelphia	**Gnanvidhi**	5.00 PM	7.30 PM		
4-Jun	Mon	Philadelphia	Aptaputra Satsang	7.00 PM	9.30 PM		
6-Jun	Wed	Raleigh	Satsang	7.00 PM	9.30 PM	Hindu Society of North Carolina Temple Main Hall 309 Aviation Parkway,Morrisville,NC,27560	Tel. Ext: 1003
7-Jun	Thu	Raleigh	Aptaputra Satsang	10.00 AM	12.30 PM		
7-Jun	Thu	Raleigh	**Gnanvidhi**	6.30 PM	9.00 PM		
8-Jun	Fri	Raleigh	Aptaputra Satsang	6.30 PM	9.00 PM		
12-Jun	Tue	Birmingham	Satsang	7.00 PM	9.30 PM	Hindu Temple and cultural Center of Birmingham 200 North Chandalar Drive,Pelham,AL,35124	Tel. Ext: 1004
13-Jun	Wed	Birmingham	**Gnanvidhi**	6.30 PM	9.00 PM		
14-Jun	Thu	Birmingham	Aptaputra Satsang	6.30 PM	9.00 PM		
16-Jun	Sat	Chicago	Satsang	4.30 PM	7.00 PM	Jain Society of Metropolitan Chicago (Jain Temple in Bartlett, IL) 435 N. Route 59, Bartlett, IL, 60103	Tel. Ext: 1005 atul.pandya7@gmail.com
17-Jun	Sun	Chicago	Aptaputra Satsang	10.00 AM	12.30 PM		
17-Jun	Sun	Chicago	**Gnanvidhi**	5.00 PM	7.30 PM		
18-Jun	Mon	Chicago	Aptaputra Satsang	6.30 PM	9.00 PM		
20-Jun	Wed	Toronto	Satsang	7.00 PM	9.30 PM	Vedic Culture Centre 4345 14th Avenue,Markham, Ontario, L3R0J2	ivdeepak@gmail.com Tel Ext: 1006 canada@dadabhagwan.org
21-Jun	Thu	Toronto	**Gnanvidhi**	6.30 PM	9.00 PM		
22-Jun	Fri	Toronto	Aptaputra Satsang	6.30 PM	9.00 PM		
23-Jun	Sat	Minneapolis	Satsang	4.30 PM	7.00 PM	S V Temple 7615 Metro Blvd.,Edina,MN,55439	sshah6@hotmail.com Tel Ext: 1007
24-Jun	Sun	Minneapolis	Aptaputra Satsang	10.00 AM	12.30 PM		
24-Jun	Sun	Minneapolis	**Gnanvidhi**	5.00 PM	7.30 PM		
25-Jun	Mon	Minneapolis	Aptaputra Satsang	6.30 PM	9.00 PM		
29-Jun	Fri	Dallas	GP Shibir	10.00 AM	6.30 PM	**Hyatt Regency DFW** 2334 N. International Parkway, Adjacent to Terminal C, Dallas-Fort Worth Airport, TX,75261	gp@dadabhagwan.org Tel. Ext. 10
30-Jun	Sat	Dallas	GP Shibir	10.00 AM	6.30 PM		
30-Jun	Sat	Dallas	Aptaputra Satsang	4.00 PM	6.30 PM		
1-Jul	Sun	Dallas	GP Shibir	10.00 AM	1.00 PM		
1-Jul	Sun	Dallas	**Gnanvidhi**	5.00 PM	7.30 PM		
2-Jul	Mon	Dallas	GP Shibir	9.30 AM	6.30 PM		
3-Jul	Tue	Dallas	**Gurupurnima**	8.00 AM	12.00 PM		
3-Jul	Tue	Dallas	**Gurupurnima**	4.00 PM	7.00 PM		
4-Jul	Wed	Dallas	GP Shibir	9.30 AM	6.30 PM		
7-Jul	Sat	Phoenix	New Mhtm Satsang	4.30 PM	7.00 PM	Indo-American Community Center 2809 W. Maryland Avenue,Phoenix,AZ,85017	mehta.vidhi@gmail.com Tel. Ext: 1008
8-Jul	Sun	Phoenix	Aptaputra Satsang	10.00 AM	12.30 PM		
8-Jul	Sun	Phoenix	**Gnanvidhi**	5.00 PM	7.30 PM		
9-Jul	Mon	Phoenix	Aptaputra Satsang	7.00 PM	9.30 PM		
14-Jul	Sat	Los Angeles	Satsang	4.30 PM	7.00 PM	Jain Temple 8072 Commonwealth Ave,Buena Park,CA ,90621	Tel. Ext: 1009 boloram@sbcglobal.net
15-Jul	Sun	Los Angeles	Aptaputra Satsang	10.00 AM	12.30 PM		
15-Jul	Sun	Los Angeles	**Gnanvidhi**	5.00 PM	7.30 PM		

Aptaputra's USA Satsang Program 2012

29-May	Tue	Virginia	Aptaputra Satsang	6.00 PM	8.30 PM	Rajdhani Mandir, VA 20151	Tel Ext. 1012
6-Jun	Wed	Charlotte, NC	Aptaputra Satsang	7.00 PM	9.30 PM		Tel. Ext: 1003
14-Jul	Sat	Simi Valley	Aptaputra Satsang	4.30 PM	7.00 PM	Royal Delhi Palace CA 91303	Tel. Ext: 1009

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

अडालज त्रिमंदिर

दि. **२ अगस्त** (गुरु), सुबह ९-३० से १२ - **रक्षाबंधन के अवसर पर दर्शन-भक्ति**

दि. **१० अगस्त** (शुक्र), रात १० से १२ - **जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष भक्ति**

दि. **११ अगस्त** (शनि), शाम ४-३० से ७-**सत्संग** तथा **१२ अगस्त** (रवि), दोपहर ३-३० से ७-**ज्ञानविधि**

पर्युषण पर्व - दि. १२-१९ सितम्बर २०१२

पर्युषण के दौरान आप्तवाणी-८, क्लेश रहित जीवन (गुजराती) के पृष्ठों पर वाचन और सत्संग होगा। हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी।

दि. **२० सितम्बर** (गुरु) सुबह 9 बजे - **दर्शन का विशेष कार्यक्रम**

हैदराबाद

दि.**१७-१८ अगस्त** (शुक्र-शनि), शाम ६-३० से ९-**सत्संग** तथा **१९ अगस्त** (रवि), शाम ५-३० से ९-**ज्ञानविधि**

स्थल : भारतीय विद्या भवन, 5/9/1105, बशीर बाग, किंग कोठी रोड, हैद्राबाद-29. **संपर्क :** 9989841786

बेंगलूर

दि. **२१ अगस्त** (मंगल), शाम ६-३० से ९ - **सत्संग** तथा **२२ अगस्त** (बुध), शाम ६ से ९-३० - **ज्ञानविधि**

स्थल : शिक्षक सदन ओडिटोरियम होल, कावेरी भवन के सामने, के.जी.रोड, बेंगलूर-२. **संपर्क :** 9590979099

औरंगाबाद : दि. **६-७ अक्तूबर** - **सत्संग** तथा **ज्ञानविधि**

जयपुर : दि. **९-१० अक्तूबर** - **सत्संग** तथा **ज्ञानविधि**

दिल्ली : दि. **१२-१३-१४ अक्तूबर** - **सत्संग** तथा **ज्ञानविधि**

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'सोहम'** पर हर रोज़ दोपहर १-३० से २, शाम ६-३० से ७ (रिपीट) (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन-गिरनार'** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० और दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह १० से १०-३० और शाम ५ से ५-३० (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन-सप्तगिरि'** पर सोम से शुक्र सुबह ७-३० से ८ (तेलुगु में) - **नया**

USA - 'TV Asia' पर सोम से शुक्र, सुबह ७-३० से ८ (गुजराती में)

USA-UK - **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 648-युएसए) पर हर रोज़ सुबह ८ से ८-३० (गुजराती में)

Europe - **'वीनस'** (स्काय प्लेटफार्म-चेनल 805) पर हर रोज़ रात १० से ११ (हिन्दी में)

- **समग्र विश्व में** (भारत और यु.एस.ए. के अलावा) **सोनी टीवी** पर सोम से शुक्र सुबह ७-३० से ८ (हिन्दी में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'दूरदर्शन'** पर हर बुध-गुरु-शुक्र सुबह ९ से ९-३० (हिन्दी में) - **नई दृष्टि, नई राह**
- **'आस्था'** पर हर रोज़ रात १०-२० से १०-५० (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन' डीडी-गिरनार** पर हर रोज़ रात ९ से ९-३० - 'ज्ञानप्रकाश' (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन-सह्याद्रि'** पर सुबह ७-३० से ८ (सोम-मंगल-गुरु-शनि), सुबह ७-१५ से ७-३० (बुध-शुक्र) (मराठी में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह ९ से ९-३० और शाम ८-३० से ९ (गुजराती में)

- **समग्र विश्व में** (भारत के अलावा) **'SAHARA ONE'** पर सोम से शुक्र, सुबह ९ से ९-३० (गुजराती में)

USA-UK - **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 648-युएसए) पर हर रोज़ रात ९-३० से १० (गुजराती में)

मई २०१२
वर्ष - ७, अंक - ७
अखंड क्रमांक - ७९

दादावाणी

RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2012-2014
Valid up to 31-12-2014
EPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2012
Valid up to 30-6-2012
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

ज्ञानी की शरण में काम निकाल लो...

यदि तुम सीधे होकर 'मैं कुछ भी नहीं जानता हूँ', अनंत काल की भटकन में से मुझे छुडाइए, बस इतना ही कह दो तो हम तुम्हारा हल ला देंगे। ज्ञानी पुरुष जो चाहे सो करें, क्योंकि मोक्ष दान का लाइसन्स उनके हाथ में होता है। कभी कभार ऐसे ज्ञानी प्रकट होते हैं। उसमें भी अक्रम मार्ग के ज्ञानी तो दस लाख सालों के बाद प्रकट होते हैं और वह भी ऐसे कलियुग में। लिफ्ट में ऊपर ले जाते हैं, सीढ़ी चढ़कर हाँफना नहीं है। अरे! चमकारे में मोती पिरो ले। यह बिजली का चमकारा हुआ है तब तू मोती पिरो ले। (ऐसा अक्रम विज्ञान प्रकट हुआ है तब तू अपना काम निकाल ले।)

-दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.